Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ मोक्ष्यसंन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः॥

अर्जुन उवाच।

संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वम् इच्छामि वेदितुम् ।

त्यागस्य च हृषीकेश पृथक् केशिनिषूदन ॥ १८ - १ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन	Arjuna	Arjuna	अर्जुन (ने)	अर्जुन
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाला
संन्यासस्य	Sannyasasya	of renunciation	संन्यास के	संन्यासाचे
महाबाहो	Mahaabaaho	O mighty armed!	हे महापराक्रमी	हे महापराक्रमी
तत्त्वम्	Tattvam	truth	तत्त्व (को)	तत्त्व
इच्छामि	Ichchhaami	I wish	चाहता हूँ	इच्छितो
वेदितुम्	Veditum	to know	जानना	जाणणे
त्यागस्य	Tyaagasya	of relinquishment	त्याग के	त्यागाचे
च	Cha	and	और	आणि
हृषीकेश	Hrusheekesha	O Krishna, the Lord of senses!	हे अन्तर्यामिन् श्रीकृष्ण !	(सर्व इंद्रियांना स्वाधीन ठेवणाऱ्या) हे श्रीकृष्णा !
पृथक्	Pruthak	Severally / distinctly	अलग अलग (भेद)	वेग - वेगळे (स्वरूप)
केशिनिषूदन	Keshi-niShudana	O Slayer of demon Kesi!	केशी नामक राक्षस का वध करनेवाले हे श्रीकृष्ण !	केशी नामक राक्षसाला नष्ट करणाऱ्या श्रीकृष्णा !

अन्वय :- अर्जुनः उवाच । हे महाबाहो ! केशिनिषूदन हृषीकेश ! (अहम्) संन्यासस्य त्यागस्य च तत्त्वम् पृथक् वेदितुम् इच्छामि ॥ १८ - १ ॥

English translation:-

Arjuna said, " O mighty armed! I desire to know distinctly the truth of renunciation, O Lord of senses! And also of relinquishment, O Slayer of demon Kesi."

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने कहा , " हे महापराक्रमी ! हे अन्तर्यामिन् ! केशी नामक राक्षस का वध करनेवाले हे श्रीकृष्ण ! मैं संन्यास और त्याग को तथा इनके अलग अलग भेद को , अच्छी तरह जानना चाहता हूँ ।"

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुन म्हणाला , " केशी नावाच्या राक्षसाचा वध करणाऱ्या पराक्रमी आणि सर्व इंद्रियांना स्वाधीन ठेवणाऱ्या हे श्रीकृष्णा ! तुझ्याकडून संन्यासाचे आणि त्यागाचे तत्त्व मी वेगळे वेगळे समजून घेऊ इच्छितो ."

विनोबांची गीताई :-

अर्जुन म्हणाला

संन्यासाचें कसें तत्त्व त्यागाचें हि कसें असे ।

मी ज़ाणूं इच्छितों कृष्णा सांगावें वेगवेगळें ॥ १८ - १ ॥

श्री भगवान् उवाच ।

काम्यानाम् कर्मणाम् न्यासम् संन्यासम् कवयः विदुः ।

सर्वकर्म फल - त्यागम् प्राहुः त्यागम् विचक्षणाः ॥ १८ - २ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान्	Shree Bhagavaan	The Blessed Lord	श्री भगवान् (ने)	श्री भगवान
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाले
काम्यानाम्	Kaamyaanaam	those full of desire	सकाम	सकाम
कर्मणाम्	KarmaNaam	of actions	कर्मों के	कर्मांचा
न्यासम्	Nyaasam	renunciation	त्याग को	त्याग
संन्यासम्	Sannyaasam	renunciation	संन्यास	संन्यास
कवयः	KavayaH	sages	पण्डितजन (तो)	विद्वान लोक
विदुः	ViduH	understand	समझते हैं	समजतात
सर्वकर्म	Sarva-Karma	all actions	सर्व कर्मों (के)	सर्व कर्म
फल - त्यागम्	Phala - Tyaagam	Fruit - abandonment / relinquishment	फल के त्याग को	फळत्याग करण्याला
प्राहुः	PraahuH	declare	कहते हैं	म्हणतात
त्यागम्	Tyaagam	abandonment / relinquishment	त्याग	त्याग
विचक्षणाः	VichakshaNaaH	the wise	विवेकी पुरुष	विवेकी पण्डित लोक

अन्वय :- श्री भगवान् उवाच - कवयः काम्यानाम् कर्मणाम् न्यासम् संन्यासम् विदुः , विचक्षणाः च सर्वकर्म - फल - त्यागम् त्यागम् प्राहुः ॥ १८ - २ ॥

English translation:-

The renunciation of desire ridden actions, the sages understand as Sannyasa, while the wise declare the abandonment of fruits of all actions as Tyaga.

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् ने कहा , " सकाम कर्मों के परित्याग को ज्ञानीजन संन्यास कहते हैं ; तथा विवेकी , विचारकुशल पुरुष सभी कर्मों के फलों में आसक्ति के त्याग को सही त्याग कहते हैं ।"

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले , " काही विद्वान लोक , सांसारिक इच्छापूर्तीसाठी केल्या जाणाऱ्या कर्माच्या त्यागाला , संन्यास समजतात आणि सर्व कर्मफळांचा (ती ईश्वरार्पण करून) त्याग करणे याला पण्डित लोक , त्याग म्हणतात ."

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले

सोडणें काम्य कर्में तो ज्ञाते संन्यास जाणती ।

फळ सर्व चि कर्मांचें सोडणें त्याग बोलिती ॥ १८ - २ ॥

त्याज्यम् दोषवत् इति एके कर्म प्राहुः मनीषिणः ।

यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यम् इति च अपरे ॥ १८ - ३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
त्याज्यम्	Tyaajyam	should be abandoned / relinquished	त्यागने के योग्य	त्याग करण्यास योग्य
दोषवत्	DoShavat	as an evil	दोषयुक्त	दोषयुक्त
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
एके	Eke	some	कई एक	काही
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
प्राहुः	PraahuH	declare	कहते हैं	म्हणतात
मनीषिणः	ManeeShiNaH	sages / philosophers	विद्वान्	विद्वान
यज्ञ	Yadnya	sacrifice	यज्ञ	यज्ञ
दान	Daana	gift	दान	दान
तपः	TapaH	austerity	तप	तप
कर्म	Karma	acts	कर्म	कर्म
न	Na	not	नहीं	नाही
त्याज्यम्	Tyaajyam	should be relinquished	त्यागने के योग्य	त्याग करण्यास योग्य
इति	Iti	thus	यह	असे
च	Cha	and	और	आणि
अपरे	Apare	others	दूसरे विद्वान्	दुसरे विद्वान

अन्वय :- एके मनीषिणः (कर्म) कर्मम् दोषवत् (अस्ति तस्मात्) त्याज्यम् इति प्राहुः अपरे च यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यम् इति (आहुः) ॥ १८ - ३ ॥

English translation:-

Some sages declare that all actions should be relinquished as an evil; while others maintain that acts of sacrifice, gift and austerity should not be relinquished.

हिन्दी अनुवाद :-

कुछ विद्वान् लोग कहते हैं कि, सभी कर्म दोषयुक्त होने के कारण त्याज्य हैं और दूसरे विद्वान् लोगों का कहना हैं कि यज्ञ, दान और तपरुप कर्म त्यागने योग्य नहीं हैं।

मराठी भाषान्तर :-

कर्म दोषयुक्त असल्यामुळे त्याचा त्याग करावा असे काही विचारवंत म्हणतात तर अन्य काही विद्वान म्हणतात की यज्ञ, दान व तप ही कर्मे त्याज्य नाहीत आणि त्यांचा त्याग करणे योग्य नव्हे.

विनोबांची गीताई :-

दोष - रूप चि हीं कर्में सोडावीं म्हणती कुणी।
न सोडावीं चि म्हणती यज्ञ - दान - तपें कुणी ॥ १८ - ३ ॥

निश्चयम् शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम ।

त्यागः हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः ॥ १८ - ४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
निश्चयम्	Nishchayam	in conclusion with certainty	निश्चय पूर्वक निर्णय	निश्चित मत
शृणु	ShruNu	listen	(तुम) सुनो	(तू) ऐक
मे	Me	My	मेरा	माझे
तत्र	Tatra	there (between Sannyaasa and Tyaaga)	वहाँ (संन्यास और त्याग इन दोनोंमें से पहले)	तेथे (संन्यास आणि त्याग या दोहोंपैकी प्रथम)
त्यागे	Tyaage	about abandonment	त्याग के विषय में	त्यागात
भरतसत्तम	Bharata-Sattam	O Best of Bharatas!	हे श्रेष्ठ भरत कुलोत्पन्न !	हे भरत कुलोत्पन्न अर्जुना !
त्यागः	TyaagaH	abandonment or relinquishment	त्याग (सात्विक राजस और तामस भेदसे)	त्याग (सात्त्विक , राजस व तामस या प्रकारांनी)
हि	Hi	verily	क्योंकि	कारण
पुरुषव्याघ्र	PuruSha-Vyaaghra	O Tiger among men!	हे व्याघ्रके समान वीर पुरुष !	हे वाघासारख्या वीरपुरुषा !
त्रिविधः	TrividhaH	three types	तीन प्रकार (का)	तीन प्रकार (चा)
संप्रकीर्तितः	SaMpra-keertitaH	has been declared	कहा गया हैं	सांगितला गेला आहे

अन्वय :- हे भरतसत्तम ! तत्र त्यागे मे निश्चयम् शृणु । हे पुरुषव्याघ्र ! त्यागः हि त्रिविधः संप्रकीर्तितः (अस्ति) ॥ १८ - ४ ॥

English translation:-

O best of the Bharatas! In conclusion with certainty, listen from me the truth about this abandonment, verily, O tiger among men, has been declared to be of three kinds (i.e. Sattva, Rajas and Tamas).

हिन्दी अनुवाद :-

हे व्याघ्र के समान वीर पुरुष और श्रेष्ठ भरत कुलोत्पन्न अर्जुन ! संन्यास और त्याग इन दोनो में से , पहले त्याग के विषय में , तुम मेरा निश्चयपूर्वक निर्णय सुनो ; क्योंकि त्याग - सात्त्विक , राजस और तामस भेद का कारण - तीन प्रकार का कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे भरतश्रेष्ठा ! त्यागाविषयी माझा निर्णय ऐक . हे पुरुषश्रेष्ठा अर्जुना ! त्याग हा तीन प्रकारचा (सात्त्विक , राजस आणि तामस) सांगितलेला आहे .

विनोबांची गीताई :-

तरी ह्याविषयीं ऐक माझा निश्चित निर्णय ।
त्याग ज़ो म्हणती तो हि तिहेरी भेदला असे ॥ १८ - ४ ॥

यज्ञ - दान - तपः - कर्म न त्याज्यम् कार्यम् एव तत् ।

यज्ञः दानम् तपः च एव पावनानि मनीषिणाम् ॥ १८ - ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यज्ञ	Yadnya	sacrifice	यज्ञ	यज्ञ
दान	Daana	gift	दान	दान
तपः	TapaH	austerity	तप	तप
कर्म	Karma	acts	कर्म	कर्म
न	Na	not	नहीं	नाही
त्याज्यम्	Tyaajyam	should be abandoned	त्याग करनेके योग्य	टाकण्यास योग्य (नाहीत या उलट)
कार्यम्	Kaaryam	should be performed	(बल्कि वह कार्य) करना चाहिए (क्योंकि)	(ती) केली पाहिजेत (कारण)
एव	Eva	indeed	अवश्य	अवश्य
तत्	Tat	that	वह (तो)	ते (तर)
यज्ञः	YadnyaH	sacrifice	यज्ञ	यज्ञ
दानम्	Daanam	gift	दान	दान
तपः	TapaH	austerity	तप	तप
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	indeed	(ये तीनों कर्म) ही	खरोखर (तीन्हीही कर्मे)
पावनानि	Paavanaani	purifiers	पवित्र करनेवाले हैं	पवित्र करणारी (आहेत)
मनीषिणाम्	ManiiShiNaam	of the wise	बुद्धिमान् पुरुषों को	बुद्धिमान पुरुषांना

अन्वय :- यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यम् तत् कार्यम् एव । यज्ञः दानम् तपः च (एतानि) मनीषिणाम् पावनानि (एव सन्ति) ॥ १८-५ ॥

English translation:-

The acts of sacrifice, gift and austerity should not be given up but ought to be performed. The acts of sacrifice, gift and austerity are indeed purifiers of the sages.

हिन्दी अनुवाद :-

यज्ञ , दान और तप का त्याग नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें अवश्य करना चाहिए; क्योंकि यज्ञ , दान और तप बुद्धिमान् पुरुषों के अंतःकरण को पवित्र करनेवाले साधन हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

यज्ञ दान व तप ही कर्मे टाकू नयेत. ती केलीच पाहिजेत. कारण ही कर्मे, ज्ञानीजनास पावन करणारी म्हणजेच साधकाच्या चित्तशुद्धीची साधने आहेत.

विनोबांची गीताई :-

यज्ञ दान तपें नित्य करणीय अवश्यक ।
न सोडावीं चि तीं होती ज्ञानवंतास पावक ॥ १८-५ ॥

एतानि अपि तु कर्माणि सङ्गम् त्यक्-त्वा फलानि च ।

कर्तव्यानि इति मे पार्थ निश्चितम् मतम् उत्तमम् ॥ १८ - ६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
एतानि	Etaani	these	इन (यज्ञ दान और तपरूप कर्मोंको)	ही (यज्ञ दान व तपरूप कर्मे)
अपि	Api	even	भी	सुद्धा
तु	Tu	but	तथा	तसेच
कर्माणि	KarmaaNi	actions	सम्पूर्ण (कर्तव्य) कर्मोंको	सर्व (कर्तव्य) कर्मे
सङ्गम्	Sangam	attachment	आसक्ति	आसक्ती
त्यक्-त्वा	Tyaktvaa	leaving / abandoning	त्याग करके	त्याग करून
फलानि	Phalaani	fruits	फलोंका	फळे
च	Cha	and	आणि	आणि
कर्तव्यानि	Kartavyaani	should be performed	करना चाहिये	केली पाहिजेत
इति	Iti	thus	यह	हे
मे	Me	My	मेरा	माझे
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
निश्चितम्	Nishchitam	certain / firm	निश्चय किया हुआ	निश्चित (केलेले)
मतम्	Matam	belief / opinion / conviction	मत हैं	मत (आहे)
उत्तमम्	Uttamam	the best	उत्तम	उत्तम

अन्वय :- अपि तु एतानि कर्माणि सङ्गम् फलानि च त्यक्-त्वा कर्तव्यानि इति, हे पार्थ! मम निश्चितम् उत्तमम् मतम् (अस्ति) ॥ १८-६ ॥

English translation:-

O Arjuna! But even these actions (of sacrifice, gift and austerity) should be performed giving up attachment and expectation of favourable outcome (fruit). This is My firm opinion with the highest conviction.

हिन्दी अनुवाद :-

इसलिये हे पार्थ! इन यज्ञ, दान और तपरूप कर्मों को तथा और भी सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को, आसक्ति और फलों का त्याग कर, अवश्य करना चाहिये; यह मेरा दृढ उत्तम मत है।

मराठी भाषान्तर :-

पण हे अर्जुना! ही यज्ञ, दान व तप कर्मे, आसक्ती सोडून व फळाची अपेक्षा न ठेवून, केली पाहिजेत ; असे माझे निर्णयात्मक उत्तम मत आहे.

विनोबांची गीताई :-

परी हीं पुण्य कर्में हि ममत्व फळ सोडुनी।
करणें योग्य हा माझा ज़ाण उत्तम निर्णय ॥ १८-६ ॥

नियतस्य तु संन्यासः कर्मणः न उपपद्यते ।

मोहात् तस्य परित्यागः तामसः परिकीर्तितः ॥ १८ - ७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
नियतस्य	Niyatasya	obligatory	(स्वभाव प्रकृती के अनुसार शास्त्रविधि से) नियत किये हुए	(स्वभाव प्रकृतीला अनुसरून पण) शास्त्राने नेमलेल्या
तु	Tu	verily	परन्तु	परंतु
संन्यासः	SannyaasaH	renunciation	(स्वरूप से) त्याग	त्याग
कर्मणः	KarmaNaH	of action	कर्म का	कर्माचा
न	Na	not	नहीं	नाही
उपपद्यते	Upapadyate	is proper	उचित है	उचित आहे
मोहात्	Mohaat	from delusion	मोह के कारण	अज्ञानस्वरूप मोहामुळे
तस्य	Tasya	of that	उस का	त्याचा
परित्यागः	ParityaagaH	abandonment / relinquishment	त्याग कर देना	त्याग
तामसः	TaamasaH	of Tamasika nature	तामस त्याग	तामस (त्याग)
परिकीर्तितः	ParikeertitaH	is declared	कहा गया है	असे सांगितले गेले आहे

अन्वय :-

नियतस्य कर्मणः तु संन्यासः न उपपद्यते । मोहात् तस्य परित्यागः तामसः परिकीर्तितः ॥ १८ - ७ ॥

English translation:-

Verily, the abandonment of any obligatory duty is not proper. Such relinquishment, out of ignorance and self delusion is considered to be of Tamasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

(निषिद्ध और सकाम कर्मों का तो स्वरूप से त्याग करना उचित ही है) परन्तु, स्वभाव प्रकृती के अनुसार, शास्त्रविधि से नियत किये हुए कर्म का, स्वरूप से त्याग करना उचित नहीं है। इसलिये, मोह के कारण तथा अज्ञान से, उस का त्याग कर देना, तामस त्याग कहा गया है।

मराठी भाषान्तर :-

आपल्या वाट्याला आलेल्या नियत कर्मांचा त्याग करणे योग्य नव्हे. अज्ञानाने त्यांचा त्याग केला तर, त्याला 'तामस त्याग' असे म्हणतात.

विनोबांची गीताई :-

नेमिलें कार्य ज़ें त्याचा संन्यास न ज़ुळे चि तो।
केला तसा जरी मोहें त्याग तामस बोलिला ॥ १८ - ७ ॥

दुःखम् इति एव यत् कर्म काय - क्लेश - भयात् त्यजेत् ।

सः कृत्वा राजसम् त्यागम् न एव त्याग फलम् लभेत् ॥ १८ - ८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
दुःखम्	DuHkham	painful	दुःखरूप	(ते सर्व) दुःख (आहे)
इति	Iti	thus	ऐसा (समझकर यदि कोई)	असे (समजून जर कोणी)
एव	Eva	even	ही	केवळ
यत्	Yat	which	जो कुछ	जे
कर्म	Karma	action	कर्म (है)	कर्म (आहे)
काय	Kaaya	body	शरीर	शरीर
क्लेश	Klesha	pain / trouble	कष्ट	कष्ट
भयात्	Bhayaat	out of fear	के भय से	भीतीने
त्यजेत्	Tyajet	abandons	त्याग कर दे	(कर्तव्य कर्मांचा) त्याग करील
सः	SaH	he	वह (ऐसा)	तो
कृत्वा	Krutvaa	performing	कर के	करून
राजसम्	Raajasam	of Rajasika nature	राजस	राजस
त्यागम्	Tyaagam	abandonment / relinquishment	त्याग	त्याग
न	Na	not	नहीं	नाही
एव	Eva	even	किसी प्रकार भी	(कोणत्याही प्रकाराने) तरी
त्याग	Tyaaga	abandonment / relinquishment	त्याग	त्याग
फलम्	Phalam	fruit, favourable outcome	फल को	फळ
लभेत्	Labhet	obtains	पाता	मिळणार

अन्वय :- (यः) दुःखम् इति (मत्वा) एव यत् कर्म कायक्लेशभयात् त्यजेत् , सः राजसम् त्यागम् कृत्वा त्यागफलम् न एव लभेत् ॥ १८-८ ॥

English translation:-

Indeed he who performs while abandoning action out of bodily pain and trouble, thus performing abandonment of Rajasika nature, does not obtain the fruit of relinquishment.

हिन्दी अनुवाद :-

सभी कुछ कर्म दुःखरूप है - ऐसा समझकर , यदि कोई शारीरिक कष्ट अथवा कठिनाई के भय से अपने कर्तव्यकर्म को त्याग दे ; तो वह ऐसा , राजसिक त्याग कर , त्याग के फल को , किसी प्रकार भी प्राप्त नहीं करता ।

मराठी भाषान्तर :-

कर्मे दुःखकारक आहेत व त्यांच्यापासून शरीराला केवळ कष्ट होतील , या भीतीने जर कोणी कर्मांचा त्याग करेल तर ; तो त्याचा त्याग ' राजस त्याग ' असल्यामुळे त्याला त्यागाची फळे , मुळीच प्राप्त होणार नाहीत .

विनोबांची गीताई :-

कष्टामुळें चि ज़ें कर्म सोडणें आंग राखुनी ।

त्याग राजस तो वांझ न देखे आपुलें फळ ॥ १८-८ ॥

कार्यम् इति एव यत् कर्म नियतम् क्रियते अर्जुन ।

सङ्गम् त्यक्-त्वा फलम् च एव सः त्यागः सात्त्विकः मतः ॥ १८-९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कार्यम्	Kaaryam	ought to be done	कार्य करना कर्तव्य है	कार्य करणे हे कर्तव्य
इति	Iti	thus	इसी	या
एव	Eva	even	केवल (भाव से)	केवळ (भावनेने)
यत्	Yat	which	जो	जे
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
नियतम्	Niyatam	obligatory	शास्त्रविहित	शास्त्रविहित
क्रियते	Kriyate	is performed	किया जाता है	केले जाते
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
सङ्गम्	Sangam	attachment	आसक्ति	आसक्ती
त्यक्-त्वा	Tyaktvaa	abandoning	त्याग कर के	त्याग करून
फलम्	Phalam	fruit	फल का	फळाचा
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	even	ही	केवळ
सः	SaH	he	वह	तो
त्यागः	TyaagaH	abandonment	त्याग	त्याग
सात्त्विकः	SaattvikaH	of Sattvika nature	सात्विक	सात्त्विक
मतः	MataH	is regarded	माना गया है	मानला आहे

अन्वय :- हे अर्जुन ! कार्यम् इति (मत्वा) एव यत् नियतम् कर्म, सङ्गम् फलम् च एव त्यक्-त्वा क्रियते, सः त्यागः सात्त्विकः मतः ॥ १८-९ ॥

English translation:-

O Arjuna! Whatever obligatory action is performed, which is ought to be done, relinquishing attachment and desire for favourable outcome (fruit) is deemed to be of Sattvika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

'कर्म करना कर्तव्य है' ऐसा समझकर, हे अर्जुन! जो शास्त्रविहित कर्म, फल की आसक्ति त्यागकर किया जाता है; वही सात्विक त्याग माना गया है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना! आपल्या वाट्याला आलेली सर्व कर्मे, आसक्ती व फळप्राप्तीची अपेक्षा सोडून, जो केवळ कर्तव्य भावनेने करतो; त्याचा तो त्याग 'सात्त्विक त्याग' होय.

विनोबांची गीताई :-

करणें नेमिलें कर्म कर्तव्य चि म्हणूनियां।
ममत्व फळ सोडुनि त्याग तो मान्य सात्विक ॥ १८-९ ॥

न द्वेष्टि अकुशलम् कर्म कुशले न अनुषज्जते ।

त्यागी सत्त्व समाविष्टः मेधावी छिन्न संशयः ॥ १८ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
द्वेष्टि	DveShTi	hates	द्वेष करता	द्वेष करतो
अकुशलम्	Akushalam	disagreeable	अशुभ / अकुशल	(जो पुरूष) अकुशल
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
कुशले	Kushale	an agreeable one	शुभ / कुशल	कुशल कर्मांमध्ये
न	Na	Not	नहीं	नाही
अनुषज्जते	AnuShajjate	is attached	आसक्त होता	आसक्त होतो
त्यागी	Tyaagii	abandoner / relinquisher	त्यागी	(खरा) त्यागी
सत्त्व	Sattva	purity	शुद्ध सत्त्वगुण से	शुद्ध सत्त्व
समाविष्टः	SamaaviShTaH	pervaded by / full of	युक्त	युक्त
मेधावी	Medhaavee	intelligent	बुद्धिमान् पुरुष	बुद्धिमान (पुरुष)
छिन्न	Chhinna	with cut asunder / having resolved	रहित	रहित
संशयः	SanshayaH	doubts	संशय	संशय

अन्वय :- (यः) त्यागी सत्त्वसमाविष्टः मेधावी छिन्नसंशयः (च भवति सः) अकुशलम् कर्म न द्वेष्टि, कुशले न अनुषज्जते ॥ १८ - १० ॥

English translation:-

The relinquisher imbued with purity of thought and purpose, having all his doubts dispelled, does not hate disagreeable (less skilled task) action nor is he attached to an agreeable (of liking and skilled task) one.

हिन्दी अनुवाद :-

जो मनुष्य, अशुभ कर्म से द्वेष नहीं करता तथा शुभ कर्म में आसक्त नहीं होता; वही सत्त्वगुण से सम्पन्न, संशयरहित, बुद्धिमान् और सच्चा त्यागी समझा जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

अकुशल (कमी प्रतीच्या) कर्मांचा जो द्वेष करीत नाही आणि कुशल (उच्च प्रतीच्या) कर्मांमध्ये जो आसक्त होत नाही आणि ज्याचे सर्व संशय नाहीसे झालेले आहेत असा तो सत्वशील, बुद्धिमान, संशयरहित पुरुष - खरा त्यागी होय.

विनोबांची गीताई :-

कर्मीं शुभाशुभीं जेव्हां राग - द्वेष न राखतो।
सत्त्वांत मुरला त्यागी ज्ञानें छेदुनि संशय ॥ १८ - १० ॥

न हि देहभृता शक्यम् त्यक्तुम् कर्माणि अशेषतः ।

यः तु कर्म फल त्यागी सः त्यागी इति अभिधीयते ॥ १८ - ११ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
हि	Hi	verily	क्योंकि	कारण
देहभृता	Deha-Bhrutaa	by embodied one	शरीरधारी किसी भी मनुष्य के द्वारा	(कोणत्याही) देहधारी माणसाला
शक्यम्	Shakyam	possible	शक्य	शक्य
त्यक्तुम्	Tyaktum	to abandon	त्याग किया जाना	त्याग करणे
कर्माणि	KarmaaNi	actions	(सब) कर्मों का	(सर्व) कर्मांचा
अशेषतः	AsheShataH	entirely / totally	सम्पूर्णता से	पूर्णपणे
यः	YaH	who	जो	जो
तु	Tu	but	परन्तु	म्हणून / परंतु
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
फल	Phala	fruit	फलका	फळ
त्यागी	Tyaagii	relinquisher	त्यागी	त्याग करणारा
सः	SaH	he	वह	तो
त्यागी	Tyaagii	relinquisher	त्यागी	खरा त्यागी
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
अभिधीयते	Abhidheeyate	is called	कहा जाता है	म्हटले जाते

अन्वय :- देहभृता अशेषतः कर्माणि त्यक्तुम् न शक्यम् ; यः तु हि कर्मफलत्यागी सः त्यागी इति अभिधीयते ॥ १८ - ११ ॥

English translation:-

It is indeed impossible to renounce actions entirely for an embodied one. However, he who renounces the desirable outcome (fruit) of any action, is regarded as the renouncer i.e. Tyagi.

हिन्दी अनुवाद :-

देहधारी मनुष्य के लिए सम्पूर्ण रूप से सभी कर्मों का त्याग करना संभव नहीं है ; अतः जो सभी कर्मों के फल में आसक्ति का त्याग करता है वही सच्चा त्यागी कहा जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

देहधारी मनुष्याला कर्मांचा पूर्णपणे (निःशेष) त्याग करणे शक्य नाही . कर्मफळांचा त्याग करणाऱ्यालाच खरा त्यागी असे म्हटले जाते .

विनोबांची गीताई :-

अशक्य देहवंतास सर्वथा कर्म सोडणें ।

म्हणूनि ज़ो फल त्यागी तो त्यागी बोलिला असे ॥ १८ - ११ ॥

अनिष्टम् इष्टम् मिश्रम् च त्रिविधम् कर्मणः फलम् ।

भवति अत्यागिनाम् प्रेत्य न तु संन्यासिनाम् क्वचित् ॥ १८ - १२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अनिष्टम्	AniShTam	undesirable / disagreeable	बुरा	वाईट
इष्टम्	IShTam	desirable / agreeable	अच्छा	चांगले
मिश्रम्	Mishram	mixed	मिश्रित	संमिश्र
च	Cha	and	और	आणि
त्रिविधम्	Trividham	of three types	तीन प्रकार का	तीन प्रकारचे
कर्मणः	KarmaNaH	of action	कर्मों का	कर्मांचे
फलम्	Phalam	fruit	फल	फळ
भवति	Bhavati	accrues	होता है	होते
अत्यागिनाम्	Atyaaginaam	to non-relinquishers	कर्मफल का त्याग न करनेवाले मनुष्यों के	कर्मफळाचा त्याग न करणाऱ्या पुरुषांना
प्रेत्य	Pretya	after death	मरने के पश्चात्	मेल्यानंतर
न	Na	not	नहीं	नाही
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
संन्यासिनाम्	Sannyaasinaam	to those who renunciate	सच्चे त्यागी (मनुष्यों के कर्मों का फल)	कर्मफळांचा त्याग करणाऱ्यांना
क्वचित्	Kvachit	ever	किसी काल में भी	कधीही

अन्वय :- अनिष्टम् इष्टम् मिश्रम् च (इति) त्रिविधम् कर्मणः फलम् प्रेत्य अत्यागिनाम् भवति न संन्यासिनाम् तु क्वचित् न (भवति) ॥ १८ - १२ ॥

English translation:-

After death, the threefold fruit of action – undesirable, desirable and mixed one – accrues to him who do not relinquish; but there is none ever for him who renounces favourable outcome for every action initiated.

हिन्दी अनुवाद :-

कर्मों के तीन प्रकार के फल - अच्छा , बुरा और मिश्रित - मरनेके बाद कर्मफल में आसक्ति का त्याग न करनेवाले को मिलते हैं ; परन्तु सच्चे त्यागी को कभी कोई ऐसा फल नहीं मिलता है ; क्योंकि , वह जन्म - मरण के फेरोंसे मुक्त हो जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

अनिष्ट (पश्वादि योनिप्राप्ती) , इष्ट (देवादि योनिप्राप्ती) आणि मिश्रित (मनुष्यादि योनिप्राप्ती) , अशी कर्मांची त्रिविध फळे - मेल्यावर , कर्मफळांचा त्याग न करणाऱ्याला मिळतात ; पण खऱ्या संन्याशांना कधीही ती फळे मिळत नाहीत .

विनोबांची गीताई :-

तिहेरी फळ कर्मांचें बरें वाईट मिश्रित ।
त्याग हीनास तें लाभें संन्यासी मुक्त त्यांतुनी ॥ १८ - १२ ॥

पञ्च एतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे ।

साङ्ख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्व कर्मणाम् ॥ १८ - १३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
पञ्च	Pancha	five	पाँच	पाच
एतानि	Etaani	these	ये	हे
महाबाहो	Mahaabaaho	O mighty armed!	हे महापराक्रमी अर्जुन !	हे महापराक्रमी अर्जुना!
कारणानि	KaaraNaani	causes	हेतु	हेतू
निबोध	Nibodha	learn	भलीभाँति जान	(ते तू चांगल्याप्रकारे) जाणून घे
मे	Me	from me	मुझसे	मजपासून
साङ्ख्ये	Saankhye	in Sankhya	सांख्यशास्त्रमें	सांख्यशास्त्रात
कृतान्ते	Krutaante	which is the end of action	कर्मोंका अन्त	कर्मांचा अंत (करण्याचा उपाय सांगणाऱ्या)
प्रोक्तानि	Proktaani	declared	कहे गये हैं	सांगितले गेले आहेत
सिद्धये	Siddhaye	for accomplishment	सिद्धिके	सिद्धीसाठी
सर्व	Sarva	all	सर्व	सर्व
कर्मणाम्	KarmaNaam	of actions	कर्मोंकी	कर्मांच्या

अन्वय :- हे महाबाहो ! सर्वकर्मणाम् सिद्धये कृतान्ते साङ्ख्ये प्रोक्तानि एतानि पञ्च कारणानि मे निबोध ॥ १८ - १३ ॥

English translation:- O mighty armed! Learn from me these five causes in the accomplishment of all actions, as taught in Sankhya, which is the end of action.

हिन्दी अनुवाद :- हे महापराक्रमी अर्जुन ! सांख्य सिद्धान्त के अनुसार सभी कर्मों की सिद्धि के लिए ये पाँच कारण (स्थूल शरीर , प्रकृति के गुणरूपी कर्ता , पाँच प्राण - इन्द्रिये तथा इन्द्रियों के अधिष्ठाता देवगण) बताए गये हैं । इसे तुम , मुझ से भलीभाँति जान लो ।

मराठी भाषान्तर :- हे महापराक्रमी अर्जुना ! सांख्यशास्त्रात कोणत्याही कर्माच्या सिद्धीसाठी , कर्मदोषाचा अंत करणारी ही पाच कारणे सांगितली आहेत . ती तू माझ्याकडून जाणून घे .

विनोबांची गीताई :-

ऐक तूं मज़पासूनि ज्ञात्यांचा कर्म निर्णय ।
परभारें चि हें कर्म करिती पांच कारणें ॥ १८ - १३ ॥

अधिष्ठानम् तथा कर्ता करणम् च पृथग्विधम् ।

विविधाः च पृथक् चेष्टाः दैवम् च एव अत्र पञ्चमम् ॥ १८ - १४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अधिष्ठानम्	AdhiShThaanam	seat of body	आधारभूत शरीर	आधारभूत शरीर
तथा	Tathaa	also	वैसे	तसेच
कर्ता	Kartaa	doer	कर्ता पुरुष	कर्ता पुरुष
करणम्	KaraNam	the senses which are instrumental	अनेक प्रकार की इंद्रियसाधने	(अनेक प्रकारची इंद्रिय) साधने
च	Cha	and	और	आणि
पृथग्विधम्	Pruthagvidham	distinct types	भिन्न भिन्न प्रकार के	भिन्न भिन्न प्रकारची
विविधाः	VividhaaH	various	नाना प्रकार की	नाना प्रकारची
च	Cha	and	तथा	आणि
पृथक्	Pruthak	distinct	अलग अलग	वेगवेगळया
चेष्टाः	CheShTaaH	functions	चेष्टाएँ	क्रिया / कार्य
दैवम्	Daivam	the presiding deity	दैव हैं	दैव
च	Cha	and	तथा	आणि
एव	Eva	even	ही	तसेच
अत्र	Atra	here	इस विषय में अर्थात् कर्मों की सिद्धि में	या विषयाच्या बाबतीत (कर्माच्या सिद्धीच्या संदर्भात)
पञ्चमम्	Panchamam	fifth	पाँचवाँ हेतु	पाचवा (हेतू आहे)

अन्वय :- अधिष्ठानम् , तथा कर्ता , पृथग्विधम् करणम् च , विविधाः पृथक् चेष्टाः , अत्र दैवम् पञ्चमम् च एव भवति ॥ १८ - १४ ॥

English translation:-

The physical body, the initiator of actions, the various senses that are instrumental, the different functions of various sorts and the presiding deity (destiny) also the fifth one here.

हिन्दी अनुवाद :-

इस विषय में अर्थात् कर्मों की सिद्धि में अधिष्ठान याने आधारभूत शरीर , कर्ता पुरुष , अनेक प्रकार की इंद्रियादि साधने तथा भिन्न - भिन्न प्रकार की अलग - अलग चेष्टाएँ और वैसे ही पाँचवाँ हेतु याने पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मों के संस्कारों का नाम दैव तथा भाग्य है ।

मराठी भाषान्तर :-

' अधिष्ठान ' म्हणजे आधारभूत शरीर , तसेच ' कर्ता ' म्हणजे कृती करणारा पुरुष , अनेक प्रकारची इंद्रियसाधने व त्या इंद्रियसाधनांकडून होणाऱ्या भिन्नभिन्न क्रिया ह्या चार गोष्टी आणि पाचवे दैव म्हणजेच ईश्वरी इच्छा अशा एकूण पाच गोष्टी कार्यसिद्धीसाठी आवश्यक असतात .

विनोबांची गीताई :-

अधिष्ठान अहंकार तशीं विविध साधनें ।
वेगळाल्या क्रिया नाना दैव तें येथ पांचवें ॥ १८ - १४ ॥

शरीरवाङ्मनोभिः यत् कर्म प्रारभते नरः ।

न्याय्यम् वा विपरीतम् वा पञ्च एते तस्य हेतवः ॥ १८ - १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
शरीरवाङ्मनोभिः	Shareera-Vaang-manobhiH	by body, speech and mind	मन वाणी और शरीरसे	मन , वाणी आणि शरीर यांच्या द्वारा
यत्	Yat	whatever	जो कुछ भी	जे
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
प्रारभते	Praarabhate	performs	करता है	सुरु करतो
नरः	NaraH	man	मनुष्य	मनुष्य
न्याय्यम्	Nyaayyam	right	शास्त्रानुकूल	शास्त्रानुकूल
वा	Vaa	or	अथवा	अथवा
विपरीतम्	Vipareetam	wrong	शास्त्र के विरुद्ध	विपरीत (शास्त्राविरुद्ध)
वा	Vaa	or	अथवा	अथवा
पञ्च	Pancha	five	पाँचों	पाच
एते	Ete	these	ये	ही
तस्य	Tasya	its	उसके	त्याची
हेतवः	HetavaH	causes	कारण हैं	कारणे (आहेत)

अन्वय :- नरः शरीरवाङ्मनोभिः न्याय्यम् वा विपरीतम् वा यत् कर्म प्रारभते, तस्य एते पञ्च हेतवः (सन्ति) ॥ १८ - १५ ॥

English translation:-

Whatever action a man performs by his body, speech and mind; whether right or wrong – these are its five causes.

हिन्दी अनुवाद :-

मनुष्य अपने मन, वाणी और शरीर के द्वारा जो कुछ भी उचित (शास्त्रानुकूल) अथवा अनुचित (शास्त्र के विरुद्ध) कर्म करता है; उसके ये पाँच कारण हैं।

मराठी भाषान्तर :-

शरीर, वाणी आणि मन याद्वारे मनुष्य जे काही न्याय्य म्हणजे शास्त्रानुसार कर्म किंवा अन्याय्य म्हणजे धर्माविरुद्ध कर्म आचरतो; त्याची ही पाच कारणे आहेत.

विनोबांची गीताई :-

काया वाचा मनें ज़ें ज़ें मनुष्य करितो जगीं।
धर्माचे वा अधर्माचें त्याचीं हीं पांच कारणें ॥ १८ - १५ ॥

तत्र एवम् सति कर्तारम् आत्मानम् केवलम् तु यः ।

पश्यति अकृतबुद्धित्वात् न सः पश्यति दुर्मतिः ॥ १८ - १६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तत्र	Tatra	there	उस विषयमें यानी कर्मोंके होनेमें	त्या विषयाच्या (कर्म होण्याच्या) बाबतीत
एवम्	Evam	thus	ऐसा	असे
सति	Sati	Being	होनेपर भी	असताना
कर्तारम्	Kartaaram	as doer / agent	कर्ता	कर्ता
आत्मानम्	Aatmaanam	the Self	अपने आपको	स्वतःला
केवलम्	Kevalam	alone	केवल	केवळ
तु	Tu	verily	परन्तु	परंतु
यः	YaH	who	जो मनुष्य	जो पुरुष
पश्यति	Pashyati	sees	समझता है	समजतो
अकृतबुद्धित्वात्	Akrut-Buddhitvaat	owing to improper understanding due to undeveloped intellect	अज्ञान से अशुद्ध बुद्धि होनेके कारण	अज्ञानजन्य अशुद्ध बुद्धीमुळे
न	Na	not	नहीं	नाही
सः	SaH	he	वह (पुरुष)	तो (पुरुष)
पश्यति	Pashyati	sees	यथार्थ समझता	यथार्थपणे जाणतो
दुर्मतिः	DurmatiH	of imperfect judgement	मलिन बुद्धिवाला	मलिन बुद्धी असणारा

अन्वय :- तत्र एवम् सति यः तु केवलम् आत्मानम् कर्तारम् पश्यति सः दुर्मतिः अकृतबुद्धित्वात् न पश्यति ॥ १८ - १६ ॥

English translation:-

That being so, the man of perverse mind, who, on account of his imperfect understanding looks upon himself, as the doer – he does not see at all.

हिन्दी अनुवाद :-

अतः जो पुरुष केवल अपने - आपको अर्थात् अपने शरीर या खुदको ही कर्ता मान बैठता है; वह अज्ञानी मनुष्य अशुद्ध बुद्धी के कारण, यथार्थ नहीं समझता है।

मराठी भाषान्तर :-

अशी ही पाच कारणे असतांना, जो मनुष्य बुद्धी सुसंस्कृत न झाल्यामुळे, मी स्वतःच कर्ता आहे असे समजतो; अशा त्या संस्कारहीन पुरुषाला काहीच समजत नसते.

विनोबांची गीताई :-

तेथ ज़ो शुद्ध आत्म्यास कर्ता मानूनि बैसला।
संस्कार - हीन तो मूढ तत्त्व नेणे चि दुर्मति ॥ १८ - १६ ॥

यस्य न अहंकृतः भावः बुद्धिः यस्य न लिप्यते ।

हत्वा अपि सः इमान् लोकान् न हन्ति न निबध्यते ॥ १८ - १७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यस्य	Yasya	whose	जिस पुरुष के अन्तःकरण में	ज्याच्या (अंतःकरणामध्ये)
न	Na	not	नहीं हैं	नाही
अहंकृतः	AhaMkrutaH	egoistic	मैं कर्ता हूँ ऐसा	(मी कर्ता आहे असा) अहंभाव
भावः	BhaavaH	notion	(व्यर्थ अभिमानपूर्वक) भाव	(व्यर्थ अभिमानपूर्वक) भाव
बुद्धिः	BuddhiH	intellect	बुद्धि (सांसारिक पदार्थों में और कर्मों में)	बुद्धी (ही सांसारिक पदार्थ व कर्मे यांमध्ये)
यस्य	Yasya	whose	जिस की	ज्याची
न	Na	not	नहीं	नाही
लिप्यते	Lipyate	is tainted	लिपायमान होती	लिप्त होते
हत्वा	Hatvaa	having slain	मारकर	मारून
अपि	Api	even	भी (वास्तव में)	सुद्धा (वास्तविकतः)
सः	SaH	he	वह पुरुष	तो (पुरुष)
इमान्	Imaan	these	इन	या
लोकान्	Lokaan	people	सारे प्राणिमात्रों को	(सर्व) लोकांना
न	Na	not	नहीं	नाही
हन्ति	Hanti	slays	मारता है	(तो) मारतो
न	Na	not	नहीं	नाही
निबध्यते	Nibadhyate	is bound	(पाप से) बँधता है	(पापांनी) बद्ध होतो

अन्वय :- यस्य अहंकृतः भावः न, बुद्धिः यस्य न लिप्यते, सः इमान् लोकान् हत्वा अपि न हन्ति, न निबध्यते ॥ १८ - १७ ॥

English translation:-

He who is free from the notion of egoism and whose understanding is not tainted – though he kills these people, he kills not and nor is bound by the cycle of life and death.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस मनुष्य के अन्तःकरण में "मैं कर्ता हूँ" का भाव नहीं है, तथा जिस की बुद्धि कर्मफल की आसक्ति से लिप्त नहीं है; वह पुरुष इन सारे प्राणियों को मारकर भी, वास्तव में न किसी को मारता है और न पाप से बँधता है।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याला "मी कर्ता आहे" असा अहंकार नसतो व ज्याची बुद्धी "मी हे केले म्हणून मी नरकात जाईन" अशा भीतीने व्याप्त होत नाही; तो या सर्व प्राणिमात्रांना मारूनही मारीत नाही व त्या कर्मफळांच्या बंधनात पडत नाही.

विनोबांची गीताई :-

नसे ज्यास अहंभाव नसे बुद्धींत लिप्तता।
मारी विश्व ज़री सारें न मारी चि न बांधिला ॥ १८ - १७ ॥

ज्ञानम् ज्ञेयम् परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना ।

करणम् कर्म कर्ता इति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥ १८ - १८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
ज्ञेयम्	Dnyeyam	the knowable	ज्ञेय	ज्ञेय
परिज्ञाता	Paridnyaataa	the knower	ज्ञाता	ज्ञाता
त्रिविधा	Trividhaa	threefold	यह तीन प्रकारकी	तीन प्रकारची
कर्मचोदना	Karmachodanaa	impulse to action	कर्म प्रेरणा (है)	कर्माला प्रेरक
करणम्	KaraNam	the instrumental organ	करण (कार्य करने वाला इंद्रिय)	साधन (कार्य करणारे इंद्रिय)
कर्म	Karma	action on a physical object	कार्य (किसी वस्तू पर की हुई क्रिया)	क्रिया
कर्ता	Kartaa	doer / agent / actor	कर्ता	कर्ता
इति	Iti	thus	यह	असा
त्रिविधः	TrividhaH	threefold	तीन प्रकारका	तीन प्रकारचा
कर्मसंग्रहः	Karma-SangrahaH	the basis of action	कर्म - संग्रह (है)	कर्मसंग्रह

अन्वय :- ज्ञानम् ज्ञेयम् परिज्ञाता इति त्रिविधा कर्मचोदना (अस्ति) करणम् कर्म कर्ता इति त्रिविधः कर्मसंग्रहः (अस्ति) ॥ १८ - १८ ॥

English translation:- Knowledge, the object of knowledge and the knower these form the threefold incitement to action; and the instrumental organ, the physical object and action performer are threefold constituents of action.

हिन्दी अनुवाद :-

कार्य का ज्ञान, ज्ञान का विषय (ज्ञेय) और ज्ञाता ये तीन कर्म की प्रेरणाएँ हैं तथा करण अर्थात् इन्द्रिय साधने, इन्द्रियों के द्वारा की गयी क्रिया और कर्ता ये स्वभाव प्रकृती के तीनों गुण - ये तीन कर्म के अंग हैं।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याने सर्व विषयांचे ज्ञान होते असे ते ज्ञान (अध्यात्म विद्या), सर्व प्रकारचे ज्ञानयोग्य विषय आणि ते सर्व जाणणारा अशी तीन (ज्ञान, ज्ञेय आणि ज्ञाता) प्रकारची कर्मप्रेरक सामुग्री आहे. इंद्रिय साधने, कर्त्याला अत्यंत इष्ट असलेली वस्तू आणि आंतरबाह्य इंद्रियांकडून कर्मव्यापार घडविणारा कर्ता अशी ही तीन (करण, कर्म आणि कर्ता) प्रकारची कर्मांची अंगे आहेत.

विनोबांची गीताई :-

ज्ञाता ज्ञेय तसें ज्ञान तिहेरी कर्म बीज हें।
क्रिया करण कर्तृत्व कर्मांगें तीन त्यांतुनी ॥ १८ - १८ ॥

ज्ञानम् कर्म च कर्ता च त्रिधा एव गुणभेदतः ।

प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावत् शृणु तानि अपि ॥ १८ - १९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
च	Cha	and	और	आणि
कर्ता	Kartaa	actor	कर्ता	कर्ता
च	Cha	and	और	आणि
त्रिधा	Tridhaa	of three types	तीन प्रकार के	तीन प्रकारांचे
एव	Eva	even	ही	च
गुणभेदतः	GuNa-BhedataH	according to distinction of Gunas	गुणों के भेद से	गुणांच्या भेदांमुळे
प्रोच्यते	Prochyate	are declared	कहे गये हैं	सांगितले गेले आहे
गुणसंख्याने	GuNa-SaMkhyaane	in the science of Gunas	गुणों की संख्या करनेवाले सांख्यशास्त्र में	(गुणांची संख्या निरूपण करणाऱ्या) सांख्यशास्त्रामध्ये
यथावत्	Yathaavat	duly	भलीभाँति	चांगल्या प्रकारे
शृणु	ShruNu	listen	तुम मुझ से सुनो	(माझ्याकडून) तू ऐक
तानि	Taani	them	उनको	ते
अपि	Api	also	भी	सुद्धा

अन्वय :- ज्ञानम् कर्म च कर्ता च त्रिधा एव गुणभेदतः गुणसंख्याने प्रोच्यते तान् अपि यथावत् शृणु ॥ १८ - १९ ॥

English translation:-

Knowledge, action and the performer of action are also declared in the science of Gunas to be of three kinds (total nine), according to the distinction of Gunas. Listen about them duly now.

हिन्दी अनुवाद :-

सांख्यमत के अनुसार ज्ञान, कर्म और कर्ता भी (सत्त्व, रजस और तम इन) गुणों के भेद से तीन - तीन (कुल मिलाकर नौ) प्रकार के माने गए हैं; उनको भी तुम मुझसे भलीभाँति सुनो।

मराठी भाषान्तर :-

गुणांची गणना ज्यांत केली आहे अशा त्या कपिलमुनींच्या सांख्यशात्रात ज्ञान, क्रिया व कर्ता हे सत्त्व, रजस आणि तम या गुणांच्या भेदाने तीन - तीन (एकूण नऊ) प्रकारचे आहेत असे सांगितले जाते. ते सर्व प्रकार तू जसेच्या तसे ऐक.

विनोबांची गीताई :-

ज्ञाता कर्मांत कर्त्यांत त्रिगुणीं तीन भेद ज़े।
रचिले ते कसे ऐक गुण - तत्त्वज्ञ वर्णिती ॥ १८ - १९ ॥

सर्व भूतेषु येन एकम् भावम् अव्ययम् ईक्षते ।

अविभक्तम् विभक्तेषु तत् ज्ञानम् विद्धि सात्त्विकम् ॥ १८ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्व	Sarva	all	सब	सर्व
भूतेषु	BhuuteShu	in beings	प्राणिमात्रों में	प्राणिमात्रांमध्ये
येन	Yena	by which	जिस ज्ञान से	ज्यामुळे (ज्ञानामुळे)
एकम्	Ekam	one	एक	एक
भावम्	Bhaavam	being	परमात्मभाव को	(परमात्म) भाव
अव्ययम्	Avyayam	indestructible	अविनाशी	अविनाशी
ईक्षते	Iikshate	one sees	(मनुष्य) देखता है	(मनुष्य) पाहतो
अविभक्तम्	Avibhaktam	inseparate	विभागरहित (समभावसे स्थित)	विभागरहित (समभावाने स्थित)
विभक्तेषु	VibhakteShu	in the separate	अलग अलग	निरनिराळ्-या
तत्	Tat	that	उस	ते
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान को	ज्ञान
विद्धि	Viddhi	know	तुम जान लो	(तू) जाण
सात्त्विकम्	Saattvikam	of Saattvika nature	सात्त्विक	सात्त्विक (आहे)

अन्वय :- येन (जीवः) विभक्तेषु सर्वभूतेषु अविभक्तम् , एकम् अव्ययम् भावम् ईक्षते , तत् ज्ञानम् सात्त्विकम् विद्धि ॥ १८ - २० ॥

English translation:-

The knowledge by which, one sees the Imperishable Being (Atman) in all existences, undivided in the divided ones; know that – that knowledge is of Sattvika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस ज्ञान के द्वारा , मनुष्य विभक्त रूप में स्थित समस्त प्राणियों में , एक ही अविभक्त और अविनाशी परमात्मा को , समभाव से स्थित देखता है ; उस ज्ञान को , तुम सात्त्विक ज्ञान ऐसा जानो ।

मराठी भाषान्तर :-

विभक्त म्हणजे वेगवेगळया सर्व प्राणिमात्रांत , एकच अविभक्त आणि अविनाशी तत्त्व (आत्मा) आहे असे ज्या ज्ञानाने समजते ; ते ज्ञान सात्त्विक आहे हे तू जाण .

विनोबांची गीताई :-

भूत - मात्रांत जे पाहे भाव एक सनातन ।

अभिन्न भेदलेल्यांत जाण तें ज्ञान सात्त्विक ॥ १८ - २० ॥

पृथक्-त्वेन तु यत् ज्ञानम् नानाभावान् पृथग्विधान् ।

वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तत् ज्ञानम् विद्धि राजसम् ॥ १८ - २१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
पृथक्-त्वेन	Pruthaktvana	by differentiation	भिन्न भिन्न प्रकार के	वेगवेगळेपणे
तु	Tu	but	किंतु	परंतु
यत्	Yat	which	जो	जे
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
नानाभावान्	Naanaa-Bhaavaan	various entities	नाना भावों को	नाना भावांना
पृथग्विधान्	Pruthagvidhaan	of distinct kinds	अलग अलग	भिन्न भिन्न
वेत्ति	Vetti	knows	जानता है	जाणतो
सर्वेषु	SarveShu	in all	सम्पूर्ण	सर्व
भूतेषु	BhuuteShu	beings	प्राणिमात्रों में	प्राणिमात्रांमध्ये
तत्	Tat	that	उस	ते
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान को	ज्ञान
विद्धि	Viddhi	know	तुम जान लो	तू जाण
राजसम्	Raajasam	Rajsika nature	राजस (ज्ञान)	राजस (आहे)

अन्वय :- तु यत् ज्ञानम् पृथक्-त्वेन सर्वेषु भूतेषु पृथग्विधान् नानाभावान् वेत्ति, तत् ज्ञानम् राजसम् विद्धि ॥ १८ - २१ ॥

English translation:-

But that knowledge by which one sees in all beings manifold entities of different kinds as varying from one another – know that – that knowledge is of Rajasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

किन्तु जिस ज्ञान के द्वारा, मनुष्य विभिन्न प्राणियों के अस्तित्त्व में अनेकता का अनुभव करता है; उस ज्ञानको, तुम राजसिक ज्ञान समझो।

मराठी भाषान्तर :-

परंतु सर्व प्राणिमात्रांत भिन्नभिन्न भाव आहेत असा वेगळेपणाचा बोध ज्या ज्ञानाने होतो; ते ज्ञान राजस आहे असे तू जाण.

विनोबांची गीताई :-

भेद बुद्धीस पोषूनि सर्व भूतांत पाहतें।
वेगळे वेगळे भाव ज़ाण तें ज्ञान राजस ॥ १८ - २१ ॥

यत् तु कृत्स्नवत् एकस्मिन् कार्ये सक्तम् अहैतुकम् ।

अतत्त्व - अर्थवत् अल्पम् च तत् तामसम् उदाहृतम् ॥ १८ - २२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	that which	जो कर्म	जे (ज्ञान)
तु	Tu	indeed / but	परन्तु	परंतु
कृत्स्नवत्	Krutsnavat	as if it were the whole	सम्पूर्ण के सदृश	सर्व असल्याप्रमाणे
एकस्मिन्	Ekasmin	in one single	एक	एकात
कार्ये	Kaarye	in effect	कार्यरूप शरीर में ही	कार्यात (शरीरात)
सक्तम्	Saktam	attached	आसक्त है	आसक्त (असते)
अहैतुकम्	Ahaitukam	without any reason	बिना युक्तिवाला	विनाकारण
अतत्त्व	Atatva	without any foundation	बिना तत्त्व के आधारवाला	तत्त्वरहित
अर्थवत्	Arthavat	in truth	सच्चाई में	अर्थाने
अल्पम्	Alpam	trivial	तुच्छ है	तुच्छ (असते)
च	Cha	and	और	तसेच
तत्	Tat	that	वह	ते (ज्ञान)
तामसम्	Taamasam	Tamasika nature	तामस	तामस
उदाहृतम्	Udaahrutam	is declared	कहा गया है	म्हटले गेले आहे

अन्वय :- यत् तु एकस्मिन् कार्ये कृत्स्नवत् सक्तम् अहैतुकम् अतत्त्व - अर्थवत् अल्पम् च, तत् (ज्ञानम्) तामसम् उदाहृतम् ॥ १८ - २२ ॥

English translation:-

And the knowledge that clings to one single effect as if it were the whole and that is without any reason, without foundation in truth and trivial – that knowledge is declared to be of Tamasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

परन्तु मनुष्य, जिस मूर्खतापूर्ण, तुच्छ और अविवेकी ज्ञान के द्वारा, अपने शरीर को ही सबकुछ मानकर, उस में ही आसक्त हो जाता है; वह ज्ञान तामसिक है।

मराठी भाषान्तर :-

हेच कार्य परिपूर्ण आहे, असे समजून त्या एकाच कार्यात, काही हेतू (प्रमाण) नसता आणि तत्त्वार्थरहित असताही, गुंतून राहिलेले ते अल्प, क्षूद्र - ज्ञान तामस होय.

विनोबांची गीताई :-

एका देहांत सर्वस्व मानुनी गुंतलें वृथा।

भावार्थ - हीन ज़ें क्षुद्र ज़ाण तें ज्ञान तामस ॥ १८ - २२ ॥

नियतम् सङ्गरहितम् अरागद्वेषतः कृतम् ।

अफल - प्र - ईप्सुना कर्म यत् तत् सात्त्विकम् उच्यते ॥ १८ - २३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
नियतम्	Niyatam	ordained	शास्त्रविधि से नियत किया हुआ	शास्त्राने सांगितलेले
सङ्गरहितम्	Sangarahitam	free from attachment	कर्तापन के अभिमान से रहित	आसक्तिरहित
अरागद्वेषतः	Araaga-DveShataH	without love or hatred / without like or dislike	बिना राग द्वेष के	प्रीती व द्वेषरहित
कृतम्	Krutam	done	किया गया हो	केलेले
अफल - प्र - ईप्सुना	Aphala – Pra - Iipsunaa	by one not desirous of fruit	फल न चाहनेवाले पुरुष द्वारा	फळाची अपेक्षा नसणाऱ्या (पुरुषाकडून)
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
यत्	Yat	that	जो	जे
तत्	Tat	that	वह	ते (कर्म)
सात्त्विकम्	Saattvikam	of Sattvika nature	सात्त्विक	सात्त्विक
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	म्हटले जाते

अन्वय :- अफलप्रेप्सुना यत् नियतम् कर्म सङ्गरहितम् अरागद्वेषतः कृतम् , तत् सात्त्विकम् उच्यते ॥ १८ - २३ ॥

English translation:-

An action which is ordained, which is free from attachment, which is done without love or hatred (like or dislike) by one not desirous of the favourable outcome (fruit), that action is declared to be of Sattvika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

जो कर्म शास्त्रविधि से नियत और कर्मफल की इच्छा और आसक्ति से रहित है, तथा बिना राग - द्वेष से किया गया है; वह कर्म , सात्त्विक कहा गया है।

मराठी भाषान्तर :-

जे कर्म फळाच्या प्राप्तीची इच्छा न करता , प्रेम व द्वेषावाचून आणि आसक्तिरहित केले जाते ते नियत कर्म , सात्त्विक कर्म होय .

विनोबांची गीताई :-

नेमिलें ज़ें न गुंतूनि राग द्वेष न राखतां ।
केले निष्काम वृत्तीनें कर्म तें होय सात्त्विक ॥ १८ - २३ ॥

यत् तु काम - ईप्सुना कर्म स - अहङ्कारेण वा पुनः ।

क्रियते बहुल - आयासम् तत् राजसम् उदाहृतम् ॥ १८ - २४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	that which	जो	जे
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
काम - ईप्सुना	Kaama - Iipsunaa	by one longing for desired	भोगों को चाहनेवाले पुरुष द्वारा	भोगासक्ती असणाऱ्यांकडून
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
स - अहङ्कारेण	Sa - AhankaareNa	with - egoism	अहंकार के साथ (पुरुषद्वारा)	अहंकारयुक्त (पुरुषाकडून)
वा	Vaa	or	या	किंवा
पुनः	punaH	again	तथा	पुन्हा
क्रियते	Kriyate	is performed	किया जाता है	केले जाते
बहुल	Bahula	with much	बहुत	खूप
आयासम्	Aayaasam	effort	परिश्रम युक्त होता है	परिश्रमाने
तत्	Tat	that	वह कर्म	ते (कर्म)
राजसम्	Raajasam	of Rajasika nature	राजस कर्म	राजस
उदाहृतम्	Udaahrutam	is declared	कहा गया है।	म्हटले गेले आहे

अन्वय :- पुनः यत् तु कामेप्सुना स - अहङ्कारेण वा बहुल - आयासम् कर्म क्रियते, तत् राजसम् उदाहृतम् ॥ १८ - २४ ॥

English translation:-

But that action, which is done by one craving for desires or again with egoism or with much effort; that is declared of Rajasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

जो कर्म फलकी कामनावाले, अहंकारी मनुष्य द्वारा, बहुत परिश्रम से किया जाता है ; वह कर्म, राजसिक कर्म कहा गया है।

मराठी भाषान्तर :-

जे कर्म फळाची अपेक्षा धरून, अहंकारपूर्वक व मोठ्या परिश्रमाने केले जाते ; ते राजस कर्म होय.

विनोबांची गीताई :-

धरूनि कामना चित्तीं ज़ें अहंकार पूर्वक।
केलें महा खटाटोपें कर्म तें होय तामस ॥ १८ - २४ ॥

अनुबन्धम् क्षयम् हिंसाम् अनवेक्ष्य च पौरुषम् ।

मोहात् आरभ्यते कर्म यत् तत् तामसम् उच्यते ॥ १८ - २५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अनुबन्धम्	Anubandham	consequence	परिणाम	परिणाम
क्षयम्	Kshayam	loss	हानि	हानी
हिंसाम्	HiMsaam	injury	हिंसा	हिंसा
अनवेक्ष्य	Anaveksha	without regard	न विचारकर अविवक से	विचार न करता / लक्षात न घेता
च	Cha	and	और	आणि
पौरुषम्	PauruSham	one's own ability	अपने सामर्थ्य को	सामर्थ्य
मोहात्	Mohaat	from delusion	केवल अज्ञान से	अज्ञानाने
आरभ्यते	Aarabhyate	is undertaken	आरम्भ किया जाता है	आरंभिले जाते
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
यत्	Yat	which	जो	जे
तत्	Tat	that	वह कर्म	ते (कर्म)
तामसम्	Taamasam	Tamasika nature	तामस कर्म	तामस
उच्यते	Uchyate	is called	कहा गया है	म्हटले जाते

अन्वय :- अनुबन्धम् क्षयम् हिंसाम् पौरुषम् च अनवेक्ष्य यत् कर्म मोहात् आरभ्यते , तत् तामसम् उच्यते ॥ १८ - २५ ॥

English translation:-

That action which is undertaken from delusion, without heed to the consequence, loss, injury and without one's own ability; that is declared to be of Tamasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

जो कर्म परिणाम , अपनी हानि , परपीडा और अपने सामर्थ्य को न सोच समझकर , केवल भ्रमवश किया जाता है ; वह कर्म तामस कर्म कहा गया है।

मराठी भाषान्तर :-

जे कर्म - मागचा पुढचा विचार , परिणाम , नाश , हिंसा व आपले सामर्थ्य या सर्वांचा विचार न करता , अविवेकाने केले जाते ; ते तामस कर्म होय .

विनोबांची गीताई :-

विनाश वेंच निष्पत्ति सामर्थ्य हि न पाहतां ।
आरंभिले चि ज़ें मोहें कर्म तें होय तामस ॥ १८ - २५ ॥

मुक्तसङ्गः अनहंवादी धृतिः उत्साहः समन्वितः ।

सिद्ध्-य -असिद्ध्-योः निर्विकारः कर्ता सात्त्विकः उच्यते ॥ १८ - २६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मुक्तसङ्गः	MuktasangaH	free from attachment	आसक्ति रहित	आसक्तिरहित
अनहंवादी	AnahaMvaadee	non-egoistic	अहंकार के वचन न बोलनेवाला	अहंकाराने न बोलणारा
धृतिः	DhrutiH	firmness / resolve	धैर्य	धैर्य
उत्साहः	UtsaahaH	enthusiasm	उत्साह	उत्साह
समन्वितः	SamanvitaH	endued with	युक्त	युक्त
सिद्ध्-य - असिद्ध्-योः	Siddhya - AsiddhyoH	in success and / or failure	कार्य में यश या अपयश मिलने में	कार्याची सिद्धी आणि असिद्धी या बाबतीत
निर्विकारः	NirvikaaraH	unaffected	हर्ष शोकादि विकारों से रहित	हर्ष शोक (इत्यादि विकारांनी) रहित
कर्ता	Kartaa	actor / performer of action / agent	कर्ता	कर्ता
सात्त्विकः	SaattvikaH	of Sattvika nature	सात्त्विक	सात्त्विक
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	असे म्हटले जाते

अन्वय :- मुक्तसङ्गः अनहंवादी धृतिः - उत्साहः - समन्वितः सिद्धि - असिद्ध्योः निर्विकारः कर्ता सात्त्विकः उच्यते ॥ १८ - २६ ॥

English translation:-

An agent who is free from attachment, non-egoistic, endued with firmness, zeal and who is unaffected by success or failure; is called of Sattvika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

जो कर्ता - आसक्ति और अहंकार से रहित तथा धैर्य और उत्साह से युक्त, एवं कार्य की सफलता और असफलता में निर्विकार रहता है; वह कर्ता, सात्विक कर्ता कहा जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

आसक्तिरहित, मी कर्ता आहे असा अहंभाव नसणारा, धैर्य आणि उत्साहाने युक्त असणारा, यश व अपयशात निर्विकार राहणारा; तो कर्ता, सात्त्विक कर्ता आहे असे म्हटले जाते.

विनोबांची गीताई :-

निःसंग निरहंकार उत्साही धैर्य मंडित।

फळो ज़ळो चळे ना तो कर्ता सात्त्विक बोलिला ॥ १८ - २६ ॥

रागी कर्म फल प्र - ईप्सु लुब्धः हिंसात्मकः अशुचिः ।

हर्ष शोक अन्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥ १८ - २७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
रागी	Raagee	passionate	आसक्ति से युक्त	आसक्त
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
फल	Phala	fruit	फल को	फळ
प्र - ईप्सु	Pra-Iipsu	desirous of	चाहनेवाला	इच्छा करणारा
लुब्धः	LubdhaH	greedy	लोभी	लोभी
हिंसात्मकः	HiMsaatmakaH	cruel	दूसरों को कष्ट देने के स्वभाववाला	दुसऱ्यांना कष्ट देणारा
अशुचिः	A-ShuchiH	impure	अशुद्धाचारी	अशुद्ध आचरण करणारा
हर्ष	HarSha	joy	आनंद	आनंद
शोक	Shoka	sorrow	और दुःख में	शोक
अन्वितः	AanvitaH	moved by	डूबा हुआ	लिप्त
कर्ता	Kartaa	agent	कर्ता	कर्ता
राजसः	RaajasaH	of Rajasika nature	राजस	राजस
परिकीर्तितः	ParikeertitaH	is called	कहा गया है	म्हटला गेला आहे

अन्वय :- रागी कर्मफल प्र - ईप्सु लुब्धः हिंसात्मकः अशुचिः हर्ष - शोक - अन्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥ १८ - २७ ॥

English translation:-

Passionate, desirous to obtain the fruit of action, greedy, cruel, impure, moved by joy and sorrow – such agent is called to be of Rajasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

आसक्ति से युक्त , कर्मफल का इच्छुक , लोभी तथा दूसरों को कष्ट देनेवाला , अपवित्र विचार करनेवाला और आनंद तथा दुःख में डूबा हुआ कर्ता ; राजसिक कर्ता कहा जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

विषयासक्त , कर्म फळाची अपेक्षा करणारा , लोभी , घातकी , अपवित्र आणि हर्षशोकांनी युक्त असलेल्या कर्त्यास ; राजस कर्ता म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

फल - कामुक आसक्त लोभी अस्वच्छ हिंसक ।

मारिला हर्ष - शोकें तो कर्ता राजस बोलिला ॥

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठः नैष्कृतिकः अलसः ।

विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामसः उच्यते ॥ १८ - २८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अयुक्तः	AyuktaH	unyoked / unsteady	अयुक्त / अस्थिर	अस्थिर
प्राकृतः	PraakrutaH	vulgar	विद्या की शिक्षा से रहित	असंस्कृत
स्तब्धः	StabdhaH	stubborn	घमण्डी	गर्विष्ठ
शठः	ShaThaH	deceitful / deceptive / cheat	धूर्त	धूर्त / ठक
नैष्कृतिकः	NaiShkrutikaH	malicious	दूसरों की जीविका का नाश करने वाला	दुसऱ्यांचा उत्कर्ष सहन न करणारा
अलसः	AlasaH	lazy	आलसी	आळशी
विषादी	ViShasadee	despondent	शोक करनेवाला	शोक करणारा
दीर्घसूत्री	Deergha - Sootree	procrastinating	काम करने में टाल - मटोल करनेवाला	चेंगट
च	Cha	and	और	आणि
कर्ता	Kartaa	agent	कर्ता	कर्ता
तामसः	TaamasaH	of Tamasika nature	तामस	तामस
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	म्हटला जातो

अन्वय :- अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठः नैष्कृतिकः अलसः विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामसः उच्यते ॥ १८ - २८ ॥

English translation:-

Unsteady, vulgar, stubborn, deceptive, malicious, indolent, despondent, procrastinating – such an agent is called to be of Tamasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

चंचल मनका , असभ्य , घमण्डी , धूर्त , दूसरों की जीविका का नाश करने वाला , आलसी , शोक करने वाला और काम करने में टाल -मटोल करनेवाला कर्ता ; तामसिक कर्ता कहा जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

चंचल मनाचा , असंस्कृत , ताठ्याने वागणारा , कपटी , दुसऱ्याचे बरे पाहवत नाही अशा वृत्तीचा , आळशी , सदा दुर्मुखलेला आणि चेंगट अशा कर्त्यास तामस कर्ता म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

स्वच्छंदी क्षुद्र गर्विष्ठ घातकी शठ आळशी ।
दीर्घ - सूत्री सदा खिन्न कर्ता तामस बोलिला ॥ १८ - २८ ॥

बुद्धेः भेदम् धृतेः च एव गुणतः त्रिविधम् शृणु ।

प्रोच्यमानम् अशेषेण पृथक्-त्वेन धनंजय ॥ १८ - २९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
बुद्धेः	BuddheH	of intellect	बुद्धि का	बुद्धीचे
भेदम्	Bhedam	division	भेद	भेद
धृतेः	DhruteH	of firmness	संकल्प का	धारणाशक्तीचे
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	even / also	भी	सुद्धा
गुणतः	GuNataH	according to qualities	गुणों के अनुसार	गुणानुसार होणारे
त्रिविधम्	Trividham	threefold	तीन प्रकार का	तीन प्रकारचे
शृणु	ShruNu	listen	तुम सुनो	(तू) ऐक
प्रोच्यमानम्	Prochya-maanam	as I declare	कहा जानेवाला	सांगितले जाणारे
अशेषेण	AsheSheNa	fully	सम्पूर्णता से	संपूर्णपणे
पृथक्-त्वेन	Pruthaktvena	distinctly	विभागपूर्वक	विभागपूर्वक
धनंजय	DhanaMjaya	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :- हे धनंजय ! बुद्धेः धृतेः च एव गुणतः त्रिविधम् भेदम् अशेषेण पृथक्-त्वेन प्रोच्यमानम् शृणु ॥ १८ - २९ ॥

English translation:-

O Arjuna! Listen from me the threefold distinction of understanding and firmness, according to the qualities (Gunas) as I explain them exhaustively and severally.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! अब तुम मुझसे गुणों के अनुसार बुद्धि के और संकल्प के भी तीन - तीन प्रकारके भेद पूर्ण रुप से अलग - अलग सुनो ।

मराठी भाषान्तर :-

हे धनंजया ! बुद्धी आणि धारणाशक्ती या गुणांमुळे होणाऱ्या , तीन प्रकारच्या भेदाचे , संपूर्णपणे , विभागपूर्वक वर्णन आता मी सांगतो ; ते तू ऐक .

विनोबांची गीताई :-

बुद्धीचे भेद ज्ञे धृतीचे हि जसे चि ज्ञे ।
गुणानुसार ते सारे सांगतों वेगवेगळे ॥ १८ - २९ ॥

प्रवृत्तिम् च निवृत्तिम् च कार्याकार्ये भयाभये ।

बन्धम् मोक्षम् च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ १८ - ३० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रवृत्तिम्	Pravruttim	activity	कर्म - मार्ग	प्रवृत्तिमार्ग
च	Cha	and	तथा	आणि
निवृत्तिम्	Nivruttim	renunciation	मोक्ष - मार्ग	निवृत्तिमार्ग
च	Cha	and	और	आणि
कार्याकार्ये	Kaaryaa-kaarye	what ought to be done and what ought not be done	कर्तव्य और अकर्तव्य को	कर्तव्यात आणि अकर्तव्यात
भयाभये	Bhayaa-bhaye	fear and fearlessness	भय और अभय को	भयामध्ये आणि अभयामध्ये
बन्धम्	Bandham	bondage	बन्धन (और)	बंधन
मोक्षम्	Moksham	liberation	मुक्ति को	मोक्ष
च	Cha	and	और	तसेच
या	Yaa	that	जो	जी
वेत्ति	Vetti	knows	यथार्थ जानती है	(यथार्थपणे) जाणते
बुद्धिः	BuddhiH	intellect	बुद्धि	बुद्धी
सा	Saa	that	वह (बुद्धि)	ती (बुद्धी)
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
सात्त्विकी	Saattvikee	of Sattvika nature	सात्त्विकि है	सात्त्विक (होय)

अन्वय :- हे पार्थ ! या बुद्धिः प्रवृत्तिम् निवृत्तिम् च कार्याकार्ये भयाभये च बन्धम् मोक्षम् च वेत्ति, सा सात्त्विकी (मता) ॥ १८-३० ॥

English translation:-

O Arjuna! The intellect which knows the paths of action and renunciation, the right and wrong action, fear and fearlessness, bondage and liberation – that intellect is of Sattvika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन! जो बुद्धि - कर्म मार्ग और मोक्ष मार्ग को, कर्तव्य और अकर्तव्य को, भय और अभय को तथा मुक्ति और बन्धन को; यथार्थ रूप से जानती है, वह बुद्धि सात्त्विक बुद्धि है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना! जी बुद्धी - कर्ममार्ग व मोक्षमार्ग तसेच कर्तव्य व अकर्तव्य, भय आणि अभय, बंध व मोक्ष यांना जाणते ती बुद्धी; सात्त्विक बुद्धी होय.

विनोबांची गीताई :-

अकर्तव्यें बंध भय कर्तव्यें मोक्ष निर्भय।

ज़ाणे सोडूं धरूं त्यांस बुद्धि सात्विक ओळख ॥ १८-३० ॥

यया धर्मम् अधर्मम् च कार्यम् च अकार्यम् एव च ।

अयथावत् प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥ १८ - ३१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यया	Yayaa	by which	जिस (बुद्धि के द्वारा)	ज्या (बुद्धीच्या द्वारा)
धर्मम्	Dharmam	righteousness	धर्म	धर्म
अधर्मम्	Adharmam	un-righteousness	अधर्म	अधर्म
च	Cha	and	और	आणि
कार्यम्	Kaaryam	what ought to be done	कर्तव्य	कर्तव्य
च	Cha	and	और	आणि
अकार्यम्	Akaaryam	what ought not to be done	अकर्तव्य (को)	अकर्तव्य
एव	Eva	even	भी	तसेच
च	Cha	and	और	सुद्धा
अयथावत्	Ayathaavat	wrongly	यथार्थ नहीं	यथार्थपणे नाही
प्रजानाति	Prajaanaati	understands	जानता	जाणते
बुद्धिः	BuddhiH	intellect	बुद्धि	बुद्धी
सा	Saa	that	वह	ती
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
राजसी	Raajasee	of Rajasika nature	राजसी है	राजस (होय)

अन्वय :- हे पार्थ ! यया च (बुद्ध्या जीवः) धर्मम् अधर्मम् च कार्यम् च अकार्यम् एव अयथावत् प्रजानाति , सा बुद्धिः राजसी (मता) ॥ १८ - ३१ ॥

English translation:-

O Arjuna! That intellect which makes a distorted grasp of righteousness and unrighteousness, of what ought to be done and what ought not to be done; that intellect is of Rajasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जिस बुद्धि के द्वारा मनुष्य , धर्म और अधर्म को तथा कर्तव्य और अकर्तव्य को ठीक तरह से नहीं जानता है ; वह बुद्धि राजसिक है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! धर्म व अधर्म , कार्य व अकार्य ह्यांना यथार्थपणे न जाणणारी अशी ती बुद्धी राजस बुद्धी होय .

विनोबांची गीताई :-

कार्याकार्य कसें काय काय धर्म अधर्म तो ।
जी ज़ाणूं न शके चोख बुद्धि राजस ओळख ॥ १८ - ३१ ॥

अधर्मम् धर्मम् इति या मन्यते तमसा आवृता ।
सर्वार्थान् विपरीतान् च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥ १८ - ३२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अधर्मम्	Adharmam	unrighteousness	अधर्म को भी	अधर्माला
धर्मम्	Dharmam	righteousness	यह धर्म है	धर्म
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
या	Yaa	which	जो (बुद्धि)	जी (बुद्धी)
मन्यते	Manyate	thinks	मान लेती है	मानते
तमसा	Tamasaa	in darkness	तमस गुण से	तमोगुणाने
आवृता	Aavruttaa	enveloped	घिरी हुई बुद्धि	व्याप्त झालेली
सर्वार्थान्	Sarvaarthaan	all things	सभी चीजों को	सर्व पदार्थांना
विपरीतान्	Vipareetaan	perverted	उल्टा समझ लेती है	विपरीत (मानते)
च	Cha	and	और	तसेच
बुद्धिः	BuddhiH	intellect	बुद्धि	बुद्धी
सा	Saa	that	वह	ती
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
तामसी	Taamasee	of Tamasika nature	तामसी बुद्धि	तामस (होय)

अन्वय :- हे पार्थ ! या तमसा आवृता (बुद्धिः) अधर्मम् धर्मम् इति सर्वार्थान् विपरीतान् च मन्यते, सा बुद्धिः तामसी (स्मृता) ॥ १८ - ३२ ॥

English translation:-

O Arjuna! The intellect enveloped in darkness which regards unrighteousness as righteousness and that views all things in a perverted manner; that intellect is considered to be of Tamasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जो बुद्धि अज्ञान के कारण अधर्म को ही धर्म मान लेती है, और इसी तरह सभी चीजों को उल्टा समझ लेती है; वह बुद्धि, तामसिक बुद्धि है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! जी बुद्धी - अविवेकाने व्याप्त होऊन अधर्मालाच धर्म मानते आणि सर्व विषयांना विपरीत स्वरूपाने जाणते म्हणजेच अर्थाचा अनर्थ करते ती बुद्धी ; तामस बुद्धी होय .

विनोबांची गीताई :-

धर्म मानी अधर्मास अंधारें भरली असे।
अर्थ जी उलटा देखे बुद्धि तामस ओळख ॥ १८ - ३२ ॥

धृत्या यया धारयते मनः प्राण - इन्द्रिय क्रियाः ।

योगेन अव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ १८ - ३३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
धृत्या	Dhrutyaa	by firmness / steadfastness	धारणशक्ति से मनुष्य	धारणाशक्तीने
यया	Yayaa	by which	जिस	ज्या
धारयते	Dhaarayate	holds	धारण करता है	(पुरुष) धारण करतो
मनः	ManaH	mind	मन	मन
प्राण	PraaNa	Life-breath	प्राण	प्राण
इन्द्रिय	IndriyaH	organ	इन्द्रियों की	इंद्रिय
क्रियाः	KriyaaH	actions	क्रियाओं को	(यांच्या) क्रिया
योगेन	Yogena	by enjoining / Yoga	ध्यानयोग के द्वारा	ध्यानयोगाने
अव्यभिचारिण्या	Avyabhi-chaariNyaa	unswerving	अव्यभिचारिणी	एकनिष्ठ
धृतिः	DhrutiH	firmness	धारणाशक्ति	धारणाशक्ती
सा	Saa	that	वह (धारणाशक्ति)	ती (धारणाशक्ती)
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
सात्त्विकी	Saattvikee	of Sattvika nature	सात्त्विकी है	सात्त्विक (होय)

अन्वय :- हे पार्थ ! (नरः) यया अव्यभिचारिण्या धृत्या मनः प्राण - इन्द्रिय - क्रियाः योगेन धारयते , सा धृतिः पार्थ सात्त्विकी (अस्ति) ॥ १८ - ३३ ॥

English translation:-

O Arjuna! the unswerving fortitude by which, through Yoga, the functions of the mind, life-breath and physical body organs are regulated; that resolve is of Sattvika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जिस संकल्प के द्वारा , केवल परमात्मा को ही जानने के ध्येय से , मनुष्य - मन , प्राण और इन्द्रियों की क्रियाओं को धारण करता है ; वह संकल्प , सात्त्विक संकल्प है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे पार्था ! ज्या धारणाशक्तीने मन , प्राण व इंद्रिये यांच्या क्रिया एकनिष्ठ योगाने , उत्तम प्रकारे चालतात ती धारणाशक्ती सात्त्विक होय .

विनोबांची गीताई :-

जी इंद्रियें मन प्राण ह्यांचे व्यापार चालवी ।
समत्वें स्थिर राहूनि धृति सात्विक ज्ञाण ती ॥ १८ - ३३ ॥

यया तु धर्म - काम - अर्थान् धृत्या धारयते अर्जुन ।

प्रसङ्गेन फलाकांङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी ॥ १८ - ३४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यया	Yayaa	by which	जिस	ज्या
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
धर्म	Dharma	righteousness / duty	धर्म	धर्म
काम	Kaama	desire	काम	कामवासना
अर्थान्	Arthaan	wealth	अर्थ	अर्थ
धृत्या	Dhrutyaa	by firmness	धारणशक्ति के द्वारा	धारणाशक्तीने
धारयते	Dhaarayate	holds	धारण करता है	धारण करतो
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
प्रसङ्गेन	Prasangena	from attachment	अत्यन्त आसक्ति से	अत्यंत आसक्तीने
फलाकांङ्क्षी	Phala-Aakaankshee	desirous of fruit of action	फल की इच्छावाला मनुष्य	फळाची अपेक्षा करणारा (मनुष्य)
धृतिः	DhrutiH	firmness	धारणशक्ति	धारणाशक्ती
सा	Saa	that	वह	ती
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे कुन्तीपुत्र अर्जुन !	हे कुन्तीपुत्र अर्जुना !
राजसी	Raajasee	of Rajasika nature!	राजसी है	राजस (होय)

अन्वय :- तु हे अर्जुन ! यया धृत्या प्रसङ्गेन फलाकांङ्क्षी (सन्) धर्म - काम - अर्थान् (नरः) धारयते , हे पार्थ ! सा धृतिः राजसी (अस्ति) ॥ १८ - ३४ ॥

English translation:-

O Arjuna! But the firmness by which one holds fast (clings) to duty (righteous), desire and wealth; desirous of favourable outcome (fruit) from each of attachments, that resolve is considered to be of Rajasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन ! फल की इच्छावाला मनुष्य जिस संकल्प के द्वारा धर्म , अर्थ और काम को अत्यन्त आसक्तिपूर्वक धारण करता है ; वह संकल्प, राजसिक संकल्प है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! ज्या धारणाशक्तीने धर्म , अर्थ आणि काम हे नीट चालविले जातात व आसक्तिने फळाची अपेक्षा केली जाते ; ती धारणाशक्ती राजस होय .

विनोबांची गीताई :-

धर्मार्थकाम सारे चि चालवी सोय पाहुनी ।
बुडवी जी फलाशेंत धृति राजस ज़ाण ती ॥ १८ - ३४ ॥

यया स्वप्नम् भयम् शोकम् विषादम् मदम् एव च ।

न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ॥ १८ - ३५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यया	Yayaa	by which	जिस	ज्या (धारणाशक्तीच्या द्वारा)
स्वप्नम्	Svapnam	state of dreaming	स्वप्नमय निद्रा	स्वप्न
भयम्	Bhayam	fear	भय	भय
शोकम्	Shokam	grief	चिन्ता	चिन्ता
विषादम्	ViShaadam	despair	(और) दुःख को	दुःख
मदम्	Madam	arrogance / conceit	(तथा) उन्मत्तता को	उन्मत्तपणा
एव	Eva	also	भी	यांनाही
च	Cha	and	और	आणि
न	Na	not	नहीं	नाही
विमुञ्चति	Vimuchyati	abandons	छोडता अर्थात् धारण किये रहता है	सोडत नाही
दुर्मेधा	Durmedhaa	a fool	दुष्ट बुद्धिवाला मनुष्य	दुष्ट बुद्धी (असणारा मनुष्य)
धृतिः	DhrutiH	steadfastness	धारणशक्ति	धारणाशक्ती
सा	Saa	that	वह	ती
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे कुन्तीपुत्र अर्जुन !	हे अर्जुना !
तामसी	Taamasee	of Tamasika nature	तामसी है	तामस (होय)

अन्वय :- हे पार्थ ! दुर्मेधा (नरः) यया स्वप्नम् भयम् शोकम् विषादम् मदम् एव च न विमुञ्चति, सा धृतिः तामसी (यता) ॥ १८-३५ ॥

English translation:-

O Arjuna! That firmness by which a fool does not give up state of day dreaming, fear, despair and also arrogance, that resolve is considered to be of Tamasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

जो बुद्धिहीन मनुष्य जिस धारणा के द्वारा - निद्रा, भय, चिन्ता, दुःख और लापरवाही को नहीं छोडता; वह संकल्प, तामसिक संकल्प कहा जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! ज्या धारणाशक्तीने अविवेकी पुरुष दिवास्वप्न, भय, शोक, खेद आणि उन्माद यांना सोडीत नाही; ती धारणाशक्ती तामस होय.

विनोबांची गीताई :-

निद्रा भय न जी सोडी शोक खेद तसा मद।
घाली झांपड बुद्धीस धृति तामस जाण ती ॥ १८-३५ ॥

सुखम् तु इदानीम् त्रिविधम् शृणु मे भरतर्षभ ।
अभ्यासात् रमते यत्र दुःखान्तम् च निगच्छति ॥ १८ - ३६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सुखम्	Sukham	happiness	सुख को	सुख
तु	Tu	indeed	भी	सुद्धा
इदानीम्	Idaaneem	now	अब	आता
त्रिविधम्	Trividham	threefold	तीन प्रकार के	तीन प्रकारचे
शृणु	ShruNu	listen	तुम सुनो	(तू) ऐक
मे	Me	from Me	मुझ से	माझ्याकडून
भरतर्षभ	Bharata - RhiShabha	Bull / best of Bharata Clan	हे भरतकुलश्रेष्ठ !	हे भरतश्रेष्ठ अर्जुना !
अभ्यासात्	Abhyaasaat	from practice	भजन ध्यान और सेवा आदि के अभ्यास से	अभ्यासामुळे
रमते	Ramate	rejoices	रममाण होकर आनंद पाता है	(साधक) रमून जातो
यत्र	Yatra	in which	जिस सुख में (साधक मनुष्य)	ज्यात
दुःखान्तम्	DuHkhaantam	end of pain / sorrow	दुःख के अन्त को	दुःखांच्या अंताकडे
च	Cha	and	और	आणि
निगच्छति	Nigachchhati	goes / attains to	प्राप्त हो जाता है	प्राप्त होतो

अन्वय :- हे भरतर्षभ ! इदानीम् तु त्रिविधम् सुखम् मे शृणु, यत्र (सुखे जीवः) अभ्यासात् रमते, दुःखान्तम् च निगच्छति ॥ १८-३६ ॥

English translation:-

O best of Bharatas, now indeed listen from Me, the three kinds of happiness; that in which a man comes to rejoice by long practice and in which he reaches the end of his sorrow.

हिन्दी अनुवाद :-

हे भरतकुलश्रेष्ठ अर्जुन! अब तुम तीन प्रकार के सुख को भी मुझ से सुनो। मनुष्य को आध्यात्मिक साधना से प्राप्त, सुख से सभी दुःखों का अन्त हो जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे भरतकुलश्रेष्ठा अर्जुना ! आता तीन प्रकारची सुखे कोणती ते तू ऐक. जेथे अभ्यासाने मन रमते आणि जेथे सर्व दुःखांचा अंत होतो, ते सात्त्विक सुख होय.

विनोबांची गीताई :-

तिन्ही प्रकारचें आतां सांगतों सुख ऐक तें।
अभ्यासें गोड ज़ें होय दुःखाचा अंत दाखवी ॥ १८-३६ ॥

यत् तत् अग्रे विषम् इव परिणामे अमृत उपमम् ।

तत् सुखम् सात्त्विकम् प्रोक्तम् आत्मबुद्धि प्रसादजम् ॥ १८ - ३७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	which	जो (ऐसा सुख है)	जे
तत्	Tat	that	वह	ते
अग्रे	Agre	at first / in the beginning	आरम्भकाल में यद्यपि	सुरवातीला
विषम्	ViSham	poison	विष के	विष
इव	Eva	like	तुल्य प्रतित होता है परन्तु	सारखे
परिणामे	PariNaame	in the end	परिणाम में	परिणामी
अमृत	Amruta	nectar	अमृत के	अमृत
उपमम्	Upamam	like	तुल्य है	तुल्य (असते)
तत्	Tat	that	वह	ते
सुखम्	Sukham	happiness	सुख	सुख
सात्त्विकम्	Saattvikam	of Saattvika nature	सात्त्विक	सात्त्विक
प्रोक्तम्	Proktam	is declared	कहा गया है	म्हटले गेले आहे
आत्मबुद्धि	Aatma-Buddhi	self realisation	परमात्माविषयक बुद्धि के	आत्मविषयक बुद्धी
प्रसादजम्	Prasaadajam	born of the purity of one's own mind	प्रसाद से उत्पन्न होनेवाला	प्रसन्नतेने उत्पन्न होणारे

अन्वय :- यत् तत् अग्रे विषम् इव, परिणामे अमृत - उपमम् आत्मबुद्धि प्रसादजम् (अस्ति), तत् सुखम् सात्त्विकम् प्रोक्तम् ॥ १८ - ३७ ॥

English translation:-

That which is like poison in the beginning but like nectar in the end; that happiness is said to be of Saattvika nature, born of the purity of intellect due to Self realisation.

हिन्दी अनुवाद :-

ऐसे आत्मबुद्धिरूपी प्रसाद से उत्पन्न सुख को जो आरम्भ में विष की तरह परन्तु परिणाम में अमृत के समान होता है; उसे सात्त्विक सुख कहते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

जे सुख आरंभी विषासारखे - क्लेशकारक पण परिणामी अमृतासारखे - सुखकारक वाटते आणि जे आत्मबुद्धीच्या प्रसादापासून उत्पन्न होते ते सात्त्विक सुख होय.

विनोबांची गीताई :-

ज़े कडू विख आरंभी अंती अमृत - तुल्य चि।
आत्म्यांत शुद्ध बुद्धीस लाभलें सुख सात्त्विक ॥ १८ - ३७ ॥

विषय इन्द्रिय संयोगात् यत् तत् अग्रे अमृत उपमम् ।

परिणामे विषम् इव तत् सुखम् राजसम् स्मृतम् ॥ १८ - ३८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
विषय	ViShaya	sensual object	विषय और	विषय
इन्द्रिय	Indriya	physical sense organ	इन्द्रिय के	इंद्रिय
संयोगात्	Sanyogaat	from the contact of	संयोग से	(यांच्या) संयोगामुळे
यत्	Yat	which	जो	जे (सुख उत्पन्न होते)
तत्	Tat	that	वह	ते (सुख)
अग्रे	Agre	at first	पहले / भोगकाल में	प्रथम (भोगकाळी)
अमृत - उपमम्	Amruta - Upamam	Nectar like	अमृत के तुल्य प्रतीत होनेपर भी	अमृततुल्य (वाटत असले तरीसुद्धा)
परिणामे	PariNaame	in the end	परिणाम में	परिणामी
विषम्	ViSham	poison	विष के	विष
इव	Eva	like	तुल्य है	समान (असते)
तत्	Tat	that	वह	ते
सुखम्	Sukham	happiness	सुख	सुख
राजसम्	Raajasam	of Rajasika nature	राजस	राजस
स्मृतम्	Smrutam	is thought	कहा गया है	म्हटले आहे

अन्वय :- यत् तत् विषय - इन्द्रिय - संयोगात् अग्रे अमृत - उपमम् (च) परिणामे विषम् इव (अस्ति) तत् सुखम् राजसम् स्मृतम् ॥ १८ - ३८ ॥

English translation:-

The happiness which arises from the contact of physical sensory organs with the sensual objects and which is like nectar in the beginning but like poison in the end – it is held to be of Rajasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

इन्द्रियों के भोग से उत्पन्न सुख को जो भोग के समय तो अमृत के समान लगता है ; परन्तु जिस का परिणाम विष की तरह होता है उस सुख को राजसिक सुख कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

विषय आणि इंद्रिये यांच्या संयोगाने निर्माण झालेले सुख अनुभवताना जे प्रथम अमृतासारखे परंतु परिणामी विषासारखे वाटते ; ते सुख , राजस सुख होय .

विनोबांची गीताई :-

आरंभीं गोडसें वाटे अंती मारक ज़ें विख ।
भासे विषय संयोगें इंद्रियां सुख राजस ॥ १८ - ३८ ॥

यत् अग्रे च अनुबन्धे च सुखम् मोहनम् आत्मनः ।

निद्रा आलस्य प्रमाद उत्थम् तत् तामसम् उदाहृतम् ॥ १८ - ३९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	which	जो	जे
अग्रे	Agre	in the beginning	भोगकाल में	आरंभी
च	Cha	and	तथा	तसेच
अनुबन्धे	Anubandhe	in the sequel	परिणाम में	परिणामी
च	Cha	and	भी	सुद्धा
सुखम्	Sukham	happiness	सुख	सुख
मोहनम्	Mohanam	delusive	मोहित करनेवाला है	भुलविणारे
आत्मनः	AatmanaH	of the self	आत्मा को	आत्म्याला
निद्रा	Nidraa	sleep	निद्रा	निद्रा
आलस्य	Aalasya	indolence / laziness	आलस्य	आळस
प्रमाद	Pramaada	heedlessness	(और) प्रमाद से	निष्काळजीपणा
उत्थम्	Uttham	arising from	उत्पन्न	उत्पन्न होणारे
तत्	Tat	that	वह	ते
तामसम्	Taamasam	of Tamasika nature	तामस	तामस
उदाहृतम्	Udaahrutam	is declared	कहा गया है	म्हटले आहे

अन्वय :- यत् अग्रे च अनुबन्धे च आत्मनः मोहनम् निद्रा - आलस्य - प्रमाद – उत्थम्, तत् सुखम् तामसम् उदाहृतम् ॥ १८ - ३९ ॥

English translation:-

The happiness which deludes the Self both at the beginning and at the end and which arises from sleep, sloth and heedlessness – that is declared to be of Tamasika nature.

हिन्दी अनुवाद :-

निद्रा , आलस्य और लापरवाही से उत्पन्न सुख को , जो भोगकाल में तथा परिणाम में भी मनुष्य को भ्रमित करनेवाला होता है ; उसे तामसिक सुख कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

जे सुख - निद्रा , आळस आणि दुर्लक्ष यापासून उत्पन्न होणारे , आरंभी व परिणामीसुद्धा चित्ताला सतत मोहित करणारे असते ; ते सुख , तामस सुख होय .

विनोबांची गीताई :-

निद्रा आळस दुर्लक्ष ह्यांनीं आत्म्यास घेरुनी ।
आरंभीं परिणामीं हि गुंगवी सुख तामस ॥ १८ - ३९ ॥

न तत् अस्ति पृथिव्याम् वा दिवि देवेषु वा पुनः ।

सत्त्वम् प्रकृतिजैः मुक्तम् यत् एभिः स्यात् त्रिभिः गुणैः ॥ १८ - ४० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
तत्	Tat	that	वह ऐसा कोई भी	ते
अस्ति	Asti	is	है	आहे
पृथिव्याम्	Pruthivyaam	on the earth	पृथ्वीतलपर	पृथ्वीवर
वा	Vaa	or	या	किंवा
दिवि	Divi	In heaven	आकाश में	स्वर्गात
देवेषु	DeveShu	among gods	देवताओं में	देवतांमध्ये
वा	Vaa	or	अथवा	अथवा
पुनः	PunaH	again	तथा इन के सिवा और कहीं भी	पुन्हा
सत्त्वम्	Sattvam	being	सत्त्व	प्राणी
प्रकृतिजैः	PrakrutijaiH	born of nature	प्रकृती से उत्पन्न	प्रकृतीपासून उत्पन्न होणाऱ्या
मुक्तम्	Muktam	freed	रहित	रहित
यत्	Yat	that	जो	जे
एभिः	EbhiH	from these	इन	यांनी
स्यात्	Syaat	may be	हो	असेल
त्रिभिः	TribhiH	from three	तीनों	तीन
गुणैः	GuNaiH	by qualities	गुणों से	गुणांनी

अन्वय :- यत् सत्त्वम् एभिः प्रकृतिजैः त्रिभिः गुणैः मुक्तम् स्यात् , तत् पृथिव्याम् वा दिवि वा पुनः देवेषु (वा) न अस्ति ॥ १८ - ४० ॥

English translation:-

There is no being on the earth nor even in the heaven among the gods who is free from these three qualities (Gunas) born of nature (Prakruti).

हिन्दी अनुवाद :-

पृथ्वी पर अथवा स्वर्ग के देवताओं में कोई भी प्राणी प्रकृति के इन तीन गुणों से मुक्त होकर नहीं रह सकता ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! प्रकृतीच्या या सात्त्विक , राजस आणि तामस अशा तीन गुणांपासून मुक्त आहे ; असा एकही प्राणिमात्र या पृथ्वीवर , स्वर्गामध्ये किंवा देवांमध्येही नाही .

विनोबांची गीताई :-

इथें पृथ्वीवरी किंवा स्वर्गीं देवादिकांत हि ।
कांहीं कुठें नसे मुक्त प्रकृतीच्या गुणांतुनी ॥ १८ - ४० ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय विशाम् शूद्राणाम् च परंतप ।

कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभाव प्रभवैः गुणैः ॥ १८ - ४१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ब्राह्मण	BraahmaNa	teacher (BrahmaNa)	ब्राह्मण	ब्राह्मण
क्षत्रिय	Kshatriya	warrior (Kshatriya)	क्षत्रिय	क्षत्रिय
विशाम्	Vishaam	Trader (Vaishya)	वैश्यों के	वैश्य
शूद्राणाम्	ShoodraaNaam	servant (Shudra)	शूद्रों के	शूद्रांची
च	Cha	and	और	आणि
परंतप	ParaMtapa	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
कर्माणि	KarmaaNi	actions	कर्म	कर्मे
प्रविभक्तानि	Pravibhaktaani	are classified	विभक्त किये गये हैं	विभागलेली
स्वभाव	Svabhaava	own nature	स्वभाव	स्वभाव
प्रभवैः	PrabhavaiH	born of	से उत्पन्न	उत्पन्न झालेल्या
गुणैः	GuNaiH	by qualities	गुणों के द्वारा	गुणांनी

अन्वय :- हे परंतप ! ब्राह्मण - क्षत्रिय - विशाम् शूद्राणाम् च कर्माणि स्वभाव प्रभवैः गुणैः प्रविभक्तानि (सन्ति) ॥ १८ - ४१ ॥

English translation:-

O Arjuna! The duties of Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas and also of Shoodras are well classified according to the qualities (Gunas) born of their own nature (Prakruti).

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! चार वर्णों - ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य और शूद्र में कर्म का विभाजन भी , मनुष्यों के गुणों से उत्पन्न स्वभाव के अनुसार ही किया जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे पराक्रमी अर्जुना ! ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य आणि शूद्र यांची कर्मे त्यांच्या प्रकृतीच्या स्वाभाविक गुणांप्रमाणे निरनिराळी असतात .

विनोबांची गीताई :-

ब्राह्मणादिक वर्णांचीं कर्में तीं तीं विभागलीं ।
स्वभाव सिद्ध ज्ञे ज्याचे गुण त्यांस धरूनियां ॥ १८ - ४१ ॥

शमः दमः तपः शौचम् क्षान्तिः आर्जवम् एव च ।

ज्ञानम् विज्ञानम् आस्तिक्यम् ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥ १८ - ४२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
शमः	ShamaH	serenity	अन्तःकरण का निग्रह करना	शांती (अंतःकरणाचा निग्रह करणे)
दमः	DamaH	self-restraint	इन्द्रियों का दमन करना	इंद्रियांचे दमन करणे
तपः	TapaH	austerity	धर्म पालन के लिये कष्ट सहना	तप (स्वधर्मपालनासाठी कष्ट सहन करणे)
शौचम्	Shaucham	purity	बाहर भीतर से शुद्ध रहना	पावित्र्य
क्षान्तिः	KshaantiH	forgiveness	दूसरों के अपराधों को क्षमा करना	क्षमाशीलता
आर्जवम्	Aarjavam	uprightness	मन , इन्द्रिय और शरीर को सरल रखना	मनाचा सरळपणा
एव	Eva	even	ही	ही (सर्वच्या सर्व च)
च	Cha	and	और	आणि
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	वेद शास्त्रों का अध्ययन अध्यापन करना	ज्ञान (वेदशास्त्रांचे अध्ययन व अध्यापन करणे)
विज्ञानम्	Vidnyaanam	wisdom / realisation out of knowledge	परमात्मा के तत्त्व का अनुभव करना	अध्यात्म ज्ञान
आस्तिक्यम्	Aastikyam	belief in God	वेद , शास्त्र और ईश्वर में श्रद्धा रखना	देवावर विश्वास
ब्रह्मकर्म	Brahmakarma	characteristic of brahmanas	ब्राह्मण के कर्म	ब्राह्मणाची कर्मे
स्वभावजम्	Svabhaavajam	born of own nature	स्वाभाविक हैं	स्वाभाविक (आहेत)

अन्वय :- शमः दमः तपः शौचम् क्षान्तिः आर्जवम् ज्ञानम् विज्ञानम् आस्तिक्यम् एव च (इति) स्वभावजम् ब्रह्मकर्म (अस्ति) ॥ १८-४२ ॥

English translation:-

Serenity, self-restraint, austerity, purity, forgive-ness and also uprightness, knowledge, wisdom and belief in God are the characteristics of Brahmanas, born of their own nature.

हिन्दी अनुवाद :-

शम , दम , तप , शौच , सहिष्णुता , सत्यवादिता , ज्ञान , विवेक और आस्तिक्य भाव ये ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

मनोनिग्रह , इंद्रियदमन , तप , अंतर्बाह्य शुचिर्भूतपणा , मनःशांती , मनाचा सरळपणा , क्षमाशीलता , ज्ञान - विज्ञान (अध्यात्मज्ञान) आणि आस्तिक्य बुद्धी ही ब्राह्मणाची स्वभावजन्य कर्मे आहेत .

विनोबांची गीताई :-

शांति क्षमा तप श्रद्धा ज्ञान विज्ञान निग्रह ।

ऋजुता आणि पावित्र ब्रह्म कर्म स्वभावतां ॥ १८-४२ ॥

शौर्यम् तेजः धृतिः दाक्ष्यम् युद्धे च अपि अपलायनम् ।

दानम् ईश्वरभावः च क्षात्रम् कर्म स्वभावजम् ॥ १८ - ४३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
शौर्यम्	Shaucham	prowess / heroism	शूर वीरता	शौर्य
तेजः	TejaH	spendour	तेज	तेज
धृतिः	DhritiH	steadfastness	धैर्य	धैर्य
दाक्ष्यम्	Daaksham	dexterity	चतुरता	दक्षता
युद्धे	Yuddhe	in battle	युद्ध में	युद्धातून
च	Cha	and	और	आणि
अपि	Api	also	भी	तरी
अपलायनम्	Apalaayanam	not fleeing	न भागना	पळून न जाणे
दानम्	Daanam	charity / generosity	दान देना	दातृत्व
ईश्वरभावः	Iishvara-BhaavaH	lordliness	शासनप्रभुत्व	शासनप्रभुत्व
च	Cha	and	और	आणि
क्षात्रम्	Kshaatram	of Kshatriya	क्षत्रिय के	क्षत्रियाची
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्मे
स्वभावजम्	Svabhaavajam	born of own nature	स्वाभाविक है	स्वाभाविक (आहेत)

अन्वय :- शौर्यम् तेजः धृतिः दाक्ष्यम् युद्धे अपि च अपलायनम् दानम् ईश्वरभावः च (इति) स्वभावजम् क्षात्रम् कर्म (अस्ति) ॥ १८ - ४३ ॥

English translation:-

Heroism, vigour, steadfastness, resourcefulness, not fleeing from the battle field, generosity and lordliness (good governance) are the characteristics of the Kshatriyas born of their own nature.

हिन्दी अनुवाद :-

शौर्य , तेज , दृढ - संकल्प , दक्षता , युद्ध से न भागना , दान देना और शासन करना - ये सब क्षत्रिय के स्वाभाविक कर्म हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

शौर्य , तेजस्विता , धैर्य , दक्षता , युद्धातून पळून न जाणे , दातृत्व आणि शासनप्रभुत्व ही क्षत्रियाची स्वभावजन्य कर्मे आहेत .

विनोबांची गीताई :-

शौर्य धैर्य प्रजा रक्षा युद्धीं हि अपलायन ।
दातृत्व दक्षता तेज क्षात्र कर्म स्वभावतां ॥ १८ - ४३ ॥

कृषि गौरक्ष्य वाणिज्यम् वैश्यकर्म स्वभावजम् ।

परिचर्यात्मकम् कर्म शूद्रस्य अपि स्वभावजम् ॥ १८ - ४४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कृषि	RhiShi	agriculture	खेती	शेती
गौरक्ष्य	Gaurakshya	cattle rearing	गोपालन	गोपालन
वाणिज्यम्	VaaNijyam	trade	और क्रय विक्रयरूप सत्य व्यवहार ये	व्यापार
वैश्यकर्म	Vaishyakarma	characteristics of Vaishya	वैश्य के कर्म	वैश्यांची कर्मे
स्वभावजम्	Svabhaavajam	born of own nature	स्वाभाविक हैं	स्वाभाविक (आहेत)
परिचर्यात्मकम्	Paricharyaa-Aatmakam	consisting of service	सब वर्णों की सेवा करना	सेवारूप
कर्म	Karma	action	कर्म है	कर्म
शूद्रस्य	Shoodrasya	characteristics of Shudras	शूद्र का	शूद्राचे
अपि	Api	also	भी	हे
स्वभावजम्	Svabhaavajam	born of own nature	स्वाभाविक	स्वाभाविक (आहे)

अन्वय :- कृषि - गौरक्ष्य - वाणिज्यम् स्वभावजम् वैश्यकर्म (अस्ति) , अपि (च) शूद्रस्य परिचर्यात्मकम् कर्म स्वभावजम् (अस्ति) ॥ १८ - ४४ ॥

English translation:-

Agriculture, cattle-rearing and trade are the characteristics of the Vaishyas born out of own nature while service oriented actions are characteristics of the Shoodras born out of own nature.

हिन्दी अनुवाद :-

खेती , गौपालन तथा व्यापार - ये सब वैश्य के स्वाभाविक कर्म हैं ; तथा शूद्र का स्वाभाविक कर्म सब प्राणिमात्रों की सेवा करना है ।

मराठी भाषान्तर :-

शेती करणे , पशुपालन करणे आणि व्यापार करणे ही वैश्याची स्वभावजन्य कर्मे आहेत ; तर सर्व प्राणिमात्रांची सेवा करणे , हे शूद्राचे स्वभावजन्य कर्म होय .

विनोबांची गीताई :-

शेती व्यापार गो - रक्षा वैश्य कर्म स्वभावतां ।
करणें पडिली सेवा शूद्र कर्म स्वभावतां ॥ १८ - ४४ ॥

स्वे स्वे कर्मणि अभिरतः संसिद्धिम् लभते नरः ।

स्वकर्म निरतः सिद्धिम् यथा विन्दति तत् शृणु ॥ १८ - ४५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
स्वे	Sve	in own	अपने	आपल्या
स्वे	Sve	in own	अपने स्वाभाविक	आपल्या (स्वाभाविक)
कर्मणि	KarmaNi	in action	कर्मों में	कर्मांमध्ये
अभिरतः	AbhirataH	devoted	तत्परता से लगा हुआ	गढलेला
संसिद्धिम्	SaMsidhim	perfection / complete fulfillment	भगवत् प्राप्तिरूप परम सिद्धि को	परमसिद्धी
लभते	Labhate	attains	प्राप्त हो जाता है	प्राप्त करून घेतो
नरः	NaraH	man	मनुष्य	मनुष्य
स्वकर्म	Svakarma	in one's action	अपने स्वाभाविक कर्म में	आपल्या स्वाभाविक कर्मात
निरतः	NirataH	engaged	लगा हुआ मनुष्य	गढलेला (पुरूष)
सिद्धिम्	Siddhim	perfection	परम सिद्धि को	परमसिद्धी
यथा	Yathaa	how	जिस प्रकार से कर्म कर के	ज्याप्रकारे
विन्दति	Vindanti	finds	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
तत्	Tat	that	उस विधि को	तो (प्रकार)
शृणु	ShruNu	listen	तुम सुनो	(तू) ऐक

अन्वय :- स्वे स्वे कर्मणि अभिरतः नरः संसिद्धिम् लभते । स्वकर्म निरतः (नरः) यथा सिद्धिम् विन्दति, तत् शृणु ॥ १८-४५ ॥

English translation:-

Devoted to his own characteristic man attains the highest perfection. Engaged in his own duty, how he attains the perfection, that you do listen from Me.

हिन्दी अनुवाद :-

मनुष्य अपने-अपने स्वाभाविक कर्म करते हुए, परम सिद्धि को कैसे प्राप्त कर सकता है; उसे तुम मुझ से सुनो।

मराठी भाषान्तर :-

आपापल्या स्वाभाविक कर्माच्या ठायी रत होऊन जो पुरुष वागतो; त्याला उत्तम सिद्धी मिळते म्हणजेच मोक्षप्राप्ती होते. स्वतःच्या कर्मानेच ती सिद्धी कशी प्राप्त होते ते तू आता ऐक.

विनोबांची गीताई :-

आपुल्या आपुल्या कर्मीं दक्ष तो मोक्ष मेळवी।
ऐक लाभे कसा मोक्ष स्व-कर्मीं लक्ष लावुनी ॥ १८-४५ ॥

यतः प्रवृत्तिः भूतानाम् येन सर्वम् इदम् ततम् ।

स्वकर्मणा तम् अभ्यर्च्य सिद्धिम् विन्दति मानवः ॥ १८ - ४६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यतः	YataH	from whom	जिस परमेश्वर से	ज्या (परमेश्वरापासून)
प्रवृत्तिः	PravruttiH	evolution / emergence	उत्पत्ति हुई है और	उत्पत्ती (झाली आहे)
भूतानाम्	Bhuutaanaam	of beings	सम्पूर्ण प्राणियों की	सर्व प्राण्यांची
येन	Yena	by whom	जिस से	ज्या (परमेश्वराने)
सर्वम्	Sarvam	all	समस्त जगत्	समस्त
इदम्	Idam	this	यह	हे (जग)
ततम्	Tatam	is pervaded	व्याप्त है	व्यापून टाकले आहे
स्वकर्मणा	SvakarmaNaa	with one's action	अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा	स्वतःच्या स्वाभाविक कर्मांनी
तम्	Tam	that	उस परमेश्वर की	त्या (परमेश्वराची)
अभ्यर्च्य	Abhyarchya	worshipping	पूजा कर के	पूजा करून
सिद्धिम्	Siddhim	perfection	परम सिद्धि को	परमसिद्धी
विन्दति	Vindanti	attains	प्राप्त हो जाता है	प्राप्त करून घेतो
मानवः	MaanavaH	man	मनुष्य	मनुष्य

अन्वय :- यतः भूतानाम् प्रवृत्तिः (अस्ति), येन इदम् सर्वम् ततम् (अस्ति) तम् (ईश्वरम्) स्वकर्मणा अभ्यर्च्य मानवः सिद्धिम् विन्दति ॥ १८-४६ ॥

English translation:-

Worshipping Him with one's action, from Whom beings emerge, by Whom all this is pervaded, man attains perfection.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस परब्रह्म परमात्मा से समस्त प्राणियों की उत्पत्ति होती है और जिस से यहा सारा जगत् व्याप्त है; उस का अपने कर्म के द्वारा पूजन कर के, मनुष्य सिद्धि को प्राप्त होता है।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याच्यापासून सर्व चराचरांची उत्पत्ती होते व ज्याने हे सर्व जग व्यापले आहे; त्या परमेश्वराची पूजा स्वकर्माने केल्याने, मनुष्याला मोक्षप्राप्ती होते.

विनोबांची गीताई :-

ज़ो प्रेरी भूत मात्रास ज्याचा विस्तार विश्व हें।
स्व-कर्म कुसुमीं त्यास पूजितां मोक्ष लाभतो ॥ १८-४६ ॥

श्रेयान् स्वधर्मः विगुणः परधर्मात् सु - अनुष्ठितात् ।

स्वभाव नियतम् कर्म कुर्वन् न आप्नोति किल्बिषम् ॥ १८ - ४७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रेयान्	Shreyaan	better	श्रेष्ठ है	श्रेष्ठ (आहे)
स्वधर्मः	SvadharmaH	one's own duty	अपना धर्म	स्वतःचा धर्म
विगुणः	ViguNaH	(though) destitute of merit	गुण रहित	गुणरहित असणारा
परधर्मात्	Paradharmaat	than the duty of another	दूसरे के धर्म से	दुसऱ्याच्या धर्मापेक्षा
सु - अनुष्ठितात्	Su-AnuShThitaat	than well performed	अच्छी प्रकार आचरण किये हुए	चांगल्या प्रकारे आचरणात आणलेल्या
स्वभाव	Svabhaava	one's own nature	स्वभाव से	स्वभावाने
नियतम्	Niyatam	ordained by	नियत किये हुए	नियत केलेले
कर्म	Karma	action	स्वधर्मरूप कर्म को	कर्म
कुर्वन्	Kurvan	doing	करता हुआ मनुष्य	करणारा (मनुष्य)
न	Na	not	नहीं	नाही
आप्नोति	Aapnoti	(he) incurs	प्राप्त होता	प्राप्त करून घेतो
किल्बिषम्	KilbiSham	sin	पाप को	पाप

अन्वय :- विगुणः स्वधर्मः सु - अनुष्ठितात् परधर्मात् श्रेयान् (अस्ति) स्वभाव - नियतम् कर्म कुर्वन् (नरः) किल्बिषम् न आप्नोति ॥ १८ - ४७ ॥

English translation:-

Better is one's own duty, however imperfect, than the duty of another even though well performed. He who does the duty ordained by his own nature incurs no sin.

हिन्दी अनुवाद :-

अपना गुणरहित , सहज और स्वाभाविक कार्य , आत्मविकास के लिए दूसरे अच्छे अस्वाभाविक कार्य से श्रेयस्कर है ; क्योंकि निष्काम भाव से , अपना स्वाभाविक कार्य करने से , मनुष्य को पाप नहीं लगता ।

मराठी भाषान्तर :-

आचरण्यात सुगम वाटणाऱ्या परधर्माहून , गुणहीन असा वाटणारा स्वधर्म श्रेष्ठ आहे . म्हणून प्रकृतीस्वभावानुसार , आपल्या वाट्याला आलेल्या कर्माचे आचरण केल्याने मनुष्याला कधीही पाप लागत नाही .

विनोबांची गीताई :-

उणा हि आपुला धर्म पर धर्माहुनी बरा ।
स्वभावें नेमिलें कर्म करी तो दोष ज़ाळितो ॥ १८ - ४७ ॥

सहजम् कर्म कौन्तेय सदोषम् अपि न त्यजेत् ।

सर्व - आरम्भाः हि दोषेण धूमेन अग्निः इव आवृताः ॥ १८ - ४८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सहजम्	Sahajam	born with one self	सहज	सहज / जन्मजात
कर्म	Karma	action	कर्म को	कर्म हे
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे कुन्तीपुत्र अर्जुन !	हे कुन्तीपुत्र अर्जुना !
सदोषम्	SadoSham	with fault	दोषयुक्त होनेपर	दोषयुक्त (असते)
अपि	Api	even	भी	तरीसुद्धा
न	Na	not	नहीं	नाही
त्यजेत्	Tyajet	one should abandon / relinquish	त्यागना चाहिये	टाकावे
सर्व	Sarva	all	सर्व	सर्व
आरम्भाः	AarambhaaH	undertakings	कर्म	कर्मे
हि	Hi	for	क्योंकि	कारण
दोषेण	DoSheNa	by evil	दोष से	दोषाने
धूमेन	Dhuumena	by smoke	धूएँ से	धुराने
अग्निः	AgniH	fire	अग्नि की	अग्नी
इव	Eva	like	भाँति	प्रमाणे
आवृताः	AavruttaaH	are enveloped	युक्त हैं	आच्छादित (असतात)

अन्वय :- हे कौन्तेय ! सहजम् कर्म सदोषम् अपि न त्यजेत् , धूमेन अग्निः इव सर्व - आरम्भाः हि दोषेण आवृताः (सन्ति) ॥ १८ - ४८ ॥

English translation:-

O Arjuna! The action born with oneself even though faulty, one should not abandon as all undertakings are fault-ridden just as fire by smoke.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! अपने दोषयुक्त सहज स्वाभाविक कर्म का भी त्याग नहीं करना चाहिए ; क्योंकि जैसे धूएंसे अग्नि आवृत्त होती है , वैसे ही सभी कर्म , किसी न किसी दोषसे युक्त होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

हे कुंतीपुत्रा अर्जुना ! स्वाभाविक (जन्मजात) कर्म सदोष असले तरी टाकू नये ; कारण अग्नी ज्याप्रमाणे धुराने आच्छादिलेला असतो , त्याप्रमाणे सर्व कर्मे कोणत्यातरी दोषाने व्यापलेली असतात .

विनोबांची गीताई :-

सहज प्राप्त तें कर्म न सोडावें सदोष हि ।
दोष सर्व चि कर्मांत राहे अग्नींत धूर तो ॥ १८ - ४८ ॥

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।

नैष्कर्म्यसिद्धिम् परमाम् संन्यासेन अधिगच्छति ॥ १८ - ४९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
असक्तबुद्धिः	Asakta-BuddhiH	one whose intellect is unattached	आसक्तिरहित बुद्धिवाला	आसक्तिरहित बुद्धी असणारा
सर्वत्र	Sarvatra	everywhere	सभी जगह	सर्वत्र
जितात्मा	Jitaatmaa	one who has conquered / subdued his self	जीते हुए अन्तःकरणवाला	अंतःकरण जिंकलेला (पुरुष)
विगतस्पृहः	VigataspruhaH	one who is liberated from desire	किसी भी प्रकार की अपेक्षा से मुक्त	निरिच्छ
नैष्कर्म्यसिद्धिम्	NaiShkarma-Siddhim	perfection consisting in freedom from action	नैष्कर्म्य सिद्धि को	निष्काम कर्मयोगाने सिद्धी
परमाम्	Paramaam	the supreme	उस परम	परम श्रेष्ठ
संन्यासेन	Sanyaasena	by renunciation	सांख्ययोग के द्वारा	संन्यासाने
अधिगच्छति	Adigachchhati	(he) attains	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो

अन्वय :- सर्वत्र असक्तबुद्धिः जितात्मा , विगतस्पृहः (नर) परमाम् नैष्कर्म्यसिद्धिम् संन्यासेन अधिगच्छति ॥ १८ - ४९ ॥

English translation:- One whose intellect is not attached anywhere (everywhere), one who has subdued his self, one who is liberated from desire, he by renunciation attains supreme state of freedom from action.

हिन्दी अनुवाद :- आसक्ति - रहित , इच्छा - रहित और जितेन्द्रिय मनुष्य , संन्यास अर्थात् सकाम कर्मों के परित्याग के द्वारा , कर्म के बन्धन से मुक्त होकर , परम नैष्कर्म सिद्धि प्राप्त करता है ।

मराठी भाषान्तर :- ज्याची बुद्धी सर्वत्र आसक्तरहित असते , ज्याने मनाला सतत काबूत ठेवलेले असते व जो निःस्पृह असतो ; त्यालाच कर्मसंन्यासाने म्हणजेच कर्मफलत्यागाने श्रेष्ठ सिद्धी प्राप्त होते .

विनोबांची गीताई :-

राखे कुठें न आसक्ति जिंकूनि मन निःस्पृह ।
तो नैष्कर्म्य महा - सिद्धि पावे संन्यास साधुनी ॥ १८ - ४९ ॥

सिद्धिम् प्राप्तः यथा ब्रह्म तथा आप्नोति निबोध मे ।

समासेन एव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥ १८-५० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सिद्धिम्	Siddhim	perfection	उस नैष्कर्म्य सिद्धि को	सिद्धी
प्राप्तः	PraaptaH	attained	प्राप्त होकर मनुष्य	प्राप्त झालेला (मनुष्य)
यथा	Yathaa	as	जिस प्रकार से	ज्याप्रकारे
ब्रह्म	Brahma	Brahman	ब्रह्म को	ब्रह्म
तथा	Tathaa	that	उस प्रकार को	तो प्रकार
आप्नोति	Aapnoti	obtains	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
निबोध	Nibodha	learn	समझ	(तू) समजून घे
मे	Me	of Me	मुझ से	माझ्याकडून
समासेन	Samaasena	in brief	संक्षेप में	थोडक्यात
एव	Eva	even	ही	केवळ
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे कुन्तीपुत्र अर्जुन !	हे कुन्तीपुत्रा अर्जुना !
निष्ठा	NiShThaa	state	निष्ठा है	निष्ठा
ज्ञानस्य	Dnyaanasya	of knowledge	ज्ञानयोग की	ज्ञानयोगाची
या	Yaa	which	जो कि	जी
परा	Paraa	supreme / highest order	परम	श्रेष्ठ

अन्वय :- हे कौन्तेय ! सिद्धिम् प्राप्तः (मानवः) यथा ब्रह्मम् आप्नोति तथा मे समासेन एव निबोध , या च (इयम् ब्रह्मप्राप्तिः सा) ज्ञानस्य परा निष्ठा (वर्तते) ॥ १८ - ५० ॥

English translation:-

O Arjuna! Also learn from Me in brief, how reaching such perfection, he attains to Brahman, that supreme consummation of knowledge.

हिन्दी अनुवाद :-

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन ! नैष्कर्म्य सिद्धि को प्राप्त हुआ साधक , किस प्रकार तत्त्वज्ञान की परानिष्ठा , परमपुरुष को प्राप्त होता है ; तुम उसे भी मुझ से , संक्षेप में सुनो ।

मराठी भाषान्तर :-

हे कुंतीपुत्रा अर्जुना ! ही सिद्धी प्राप्त झाल्यावर , ज्ञानाची परम निष्ठा जे ब्रह्म , ते कसे प्राप्त होते ; ते थोडक्यात सांगतो . ते तू समजून घे .

विनोबांची गीताई :-

सिद्धीस लाभला ब्रह्म गांठी कोण्यापरी मग ।
ज्ञानाची थोर ती निष्ठा ऐक थोड्यांत सांगतों ॥ १८ - ५० ॥

बुद्-ध्या विशुद्धया युक्तः धृत्या आत्मानम् नियम्य च।

शब्दादीन् विषयान् त्यक्-त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥ १८ - ५१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
बुद्-ध्या	Buddhyaa	with an intellect	बुद्धि से	बुद्धीने
विशुद्धया	ViShuddhayaa	of purity	विशुद्ध	अत्यंत शुद्ध
युक्तः	YuktaH	endued	युक्त होकर	युक्त असणारा
धृत्या	Dhrutyaa	by firmness	धारणशक्ति के द्वारा	धारणाशक्तीने
आत्मानम्	Aatmaanam	the self	अन्तःकरण और इन्द्रियों का	स्वतःला
नियम्य	Niyamya	having controlled	संयम कर के	संयम करून
च	Cha	and	और	आणि
शब्दादीन्	Shabdaadeen	sound etc.	शब्दादि	शब्द इत्यादी
विषयान्	ViShayaan	sense-objects	विषयों का	विषयांना
त्यक्-त्वा	Tyaktvaa	having relinquished	त्याग कर के	त्याग करून
रागद्वेषौ	Raaga-DveShau	attraction and hatred	प्रीति – द्वेष को	प्रीति - द्वेष
व्युदस्य	Vyudasya	having abandoned	सर्वथा नष्ट कर के	संपूर्ण नष्ट करून
च	Cha	and	और	आणि

अन्वय :- विशुद्धया बुद्-ध्या युक्तः , धृत्या आत्मानम् नियम्य च , शब्दादीन् विषयान् त्यक्-त्वा , रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥ १८ - ५१ ॥

English translation:-

Endowed with very pure intellect, restraining the self with firmness, turning away from sound and other sense objects and abandoning attraction and aversion.... (he is fit for becoming Brahman.)

हिन्दी अनुवाद :-

विशुद्ध बुद्धि से युक्त , मन के दृढ संकल्प द्वारा आत्मसंयम कर , शब्दादि विषयों को त्याग कर , प्रीति और द्वेष को सर्वथा नष्ट कर ; मनुष्य ब्रह्मस्वरूप के पात्र होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

अत्यंत शुद्ध बुद्धीने युक्त होऊन , धैर्याने आपल्या चित्ताचे संयमन करून , शब्दादी विषयांचा त्याग करून आणि प्रीती व द्वेष यांना जिंकून ; पुरुष ब्रह्मस्वरूप होण्यास पात्र होतो .

विनोबांची गीताई :-

बुद्धि सात्विक ज़ोडुनी धृतीचा दोर खेंचुनी ।
शब्दादि स्पर्श टाळूनि राग द्वेषांस जिंकुनी ॥ १८ - ५१ ॥

विविक्त - सेवी लघु - आशी यत् – वाक् - काय - मानसः ।

ध्यान - योग - परः नित्यम् वैराग्यम् सम् - उपाश्रितः ॥ १८ - ५२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
विविक्त - सेवी	Vivikta - Sevee	Dwelling in solitude	एकान्त और शुद्ध देश का सेवन करनेवाला	एकांतवासात राहणारा
लघु - आशी	Laghu - Aashee	eating however little	हलका सात्त्विक और नियमित भोजन करनेवाला	हलके भोजन करणारा
यत् – वाक् - काय - मानसः	Yat – Vaak – Kaaya - MaanasaH	speech, body and mind subdued	मन वाणी और शरीर को वश में कर लेनेवाला	मन , वाणी आणि शरीर यांना वश केलेला
ध्यान - योग - परः	Dhyaana – Yoga - ParaH	engaged in meditation and concentration	ध्यानयोग के परायण रहनेवाला	ध्यानयोग परायण
नित्यम्	Nityam	always	निरन्तर	नेहमी
वैराग्यम्	Vairaagyam	dispassion	भलीभाँति दृढ वैराग्य का	विरक्ती
सम् - उपाश्रितः	Sam - UpaashritaH	taking refuge in	आश्रय लेनेवाला	चांगल्याप्रकारे आश्रय घेणारा

अन्वय :- विविक्त - सेवी , लघु - आशी , यत् – वाक् - काय - मानसः , नित्यम् ध्यान - योग - परः , वैराग्यम् सम् - उपाश्रितः (च) ॥ १८ - ५२ ॥

English translation:-

Dwelling in solitude, eating but a little, with speech, mind and body subdued; always engaged in meditation and concentration, endued with dispassion....(he is fit for becoming Brahman.)

हिन्दी अनुवाद :-

एकान्त में रहकर , हल्का - सात्त्विक और नियमित भोजन कर के , अपने वाणी - कर्मेन्द्रियों और मन को संयमित रखकर , परमात्मा के ध्यान में सदैव लगा हुआ , दृढ वैराग्य का आश्रय लेनेवाला मनुष्य ; ब्रह्मस्वरूप के पात्र होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

एकांतवासात राहणारा , मोजके खाणारा , शरीर - वाणी व मन यांचा निग्रह करणारा , नित्य ध्यानयुक्त व विरक्त पुरुष ; ब्रह्मस्वरूप होण्यास पात्र होतो .

विनोबांची गीताई :-

चित्त वाचा तनू नेमी एकांतीं अल्प सेवुनी ।
गढला ध्यान योगांत दृढ वैराग्य लेउनी ॥ १८ - ५२ ॥

अहङ्कारम् बलम् दर्पम् कामम् क्रोधम् परिग्रहम् ।

विमुच्य निर्ममः शान्तः ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ १८ - ५३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अहङ्कारम्	Ahamkaaram	egoism	अहङ्कार	अहंकार
बलम्	Balam	strength	बल	बळ
दर्पम्	Darpam	arrogance	घमण्ड	घमेंड
कामम्	Kaamam	desire	काम	कामवासना
क्रोधम्	Krodham	anger	क्रोध	क्रोध
परिग्रहम्	Parigraham	covetousness	लोभ	लोभ
विमुच्य	Vimuchya	having abandoned	त्याग कर के	त्याग करून
निर्ममः	NirmamaH	without “mine”	ममता रहित	ममतारहित
शान्तः	ShaantaH	peaceful	शान्तियुक्त पुरुष	शांतियुक्त पुरुष
ब्रह्मभूयाय	Brahma-bhuuyaaya	for becoming Brahman	सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में अभिन्नभाव से स्थित होनेका	(सच्चिदानन्दघन) ब्रह्मामध्ये अभिन्न भावाने स्थित होण्यास
कल्पते	Kalpate	is fit	पात्र होता है	योग्य होतो

अन्वय :- अहङ्कारम् , बलम् , दर्पम् , कामम् , क्रोधम् , परिग्रहम् च विमुच्य निर्ममः शान्तः , (नरः) ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ १८ - ५३ ॥

English translation:-

Having abandoned egoism, violence, arrogance, desire, anger / enmity, covetousness, free from the notion of "mine" and being peaceful, he is fit for becoming Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

अहंकार , शक्ति का दुरुपयोग , घमण्ड , काम , क्रोध और लोभ को त्यागकर , ममत्वभाव से रहित , शान्त मनोबुद्धिवाला मनुष्य ; परब्रह्म , परमात्मा की प्राप्ति के योग्य बन जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

अहंकार , बलाचा दुरुपयोग , गर्व , काम - क्रोध व संचयवृत्ती यांचा त्याग करून ; ममत्वरहित व शांत झालेला पुरुष , ब्रह्मस्वरूप होण्यास योग्य ठरतो .

विनोबांची गीताई :-

बळ दर्प अहंकार काम क्रोध परिग्रह ।
ममत्वासह सोडूनि शांतीनें ब्रह्म आकळी ॥ १८ - ५३ ॥

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।

समः सर्वेषु भूतेषु मद् भक्तिम् लभते पराम् ॥ १८ - ५४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ब्रह्मभूतः	Brahma-bhuutaH	becoming Brahman	सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में एकीभाव से स्थित	ब्रह्मरूप झालेला
प्रसन्नात्मा	Prasannaatmaa	serene-minded	प्रसन्नमनवाला योगी	मन प्रसन्न असणारा
न	Na	not	न (तो किसी के लिये)	(कुणासाठीही) नाही
शोचति	Shochati	grieves	शोक करता है	शोक करतो
न	Na	not	न किसी की	(तसेच कशाचीही) नाही
काङ्क्षति	KaaNkshati	desires	आकाङ्क्षा ही करता है ऐसा	आकांक्षा करतो
समः	SamaH	equal	समभाववाला योगी	समभाव असणारा (तो योगी)
सर्वेषु	SarveShu	all	समस्त	सर्वांमध्ये
भूतेषु	BhuuteShu	to beings	प्राणियों में	प्राण्यांच्या ठायी
मद् - भक्तिम्	Mad - Bhaktim	devotion unto Me	मेरी भक्ती को	माझी भक्ती
लभते	Labhate	obtains	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
पराम्	Paraam	supreme	परम	श्रेष्ठ

अन्वय :- (सः) ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा (सन्) न शोचति न काङ्क्षति (च) सर्वेषु भूतेषु समः (भूत्वा) पराम् मद् भक्तिम् लभते ॥ १८-५४ ॥

English translation:-

Becoming Brahman, serene-minded, he neither grieves nor desires; equally disposed to all beings, he obtains supreme devotion to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

उपरोक्त ब्रह्मभूत अवस्था प्राप्त, प्रसन्न चित्तवाला साधक न तो किसी के लिये शोक करता है, न किसी वस्तु की इच्छा ही करता है। ऐसा समस्त प्राणियों में समभाववाला साधक, मेरी परम भक्ति को प्राप्त करता है।

मराठी भाषान्तर :-

तो ब्रह्मरूप झाला म्हणजे त्याचे चित्त प्रसन्न होऊन, तो कशाचाही शोक करीत नाही व कशाचीही इच्छा करीत नाही. तो सर्व प्राणिमात्रांना समदृष्टीने पाहून, माझी श्रेष्ठ भक्ती प्राप्त करतो.

विनोबांची गीताई :-

ब्रह्म झाला प्रसन्नत्वें न करी शोक कामना।
पावे माझी परा भक्ति देखे सर्वत्र साम्य जी ॥ १८-५४ ॥

भक्-त्या माम् अभिजानाति यावान् यः च अस्मि तत्त्वतः ।

ततः माम् तत्त्वतः ज्ञात्वा विशते तद् अनन्तरम् ॥ १८ - ५५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
भक्-त्या	Bhaktyaa	by devotion	पराभक्ति के द्वारा वह	भक्तीने
माम्	Maam	me	मुझ परमात्मा को	मला (परमात्म्याला)
अभिजानाति	Abhijaanaati	knows	तत्त्व से जान लेता है	तत्त्वतः जाणतो
यावान्	Yaavaan	what	जितना	जितका
यः	YaH	he who	जो हूँ	जो
च	Cha	and	और	आणि
अस्मि	Asmi	I am	हूँ	मी आहे
तत्त्वतः	TattvataH	in truth / essence	ठीक वैसा का वैसा	यथार्थपणे
ततः	TataH	then	उस के पश्चात्	नंतर
माम्	Maam	Me	मुझ को	मला
तत्त्वतः	TattvataH	in truth / essence	तत्त्व से	यथार्थपणे
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	having known	जानकर	जाणून घेतल्यावर
विशते	Vishate	enters	मुझ में प्रविष्ट हो जाता है	(माझ्या ठिकाणी) प्रवेश करतो
तद् - अनन्तरम्	Tad - Anantaram	That - afterwards / forthwith	तत्काल ही	त्या नंतर

अन्वय :- (किं च) यावान् यः च अस्मि , (तम्) माम् तत्त्वतः भक्- त्या अभिजानाति , ततः तत्त्वतः , माम् ज्ञात्वा तद् अनन्तरम् (माम्) विशते ॥ १८ - ५५ ॥

English translation:-

By devotion he knows Me in essence, what and who I am; then having known Me in essence, he forthwith enters Me.

हिन्दी अनुवाद :-

श्रद्धा और भक्ति अर्थात् पराभक्ति के द्वारा ही मैं तत्त्व से जाना जा सकता हूँ कि मैं कौन हूँ और क्या हूँ। मुझे तत्त्व से जानने के पश्चात् तत्काल ही , मनुष्य मुझ में प्रवेश कर मत्स्वरूप बन जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

भक्तीच्या योगाने मी केवढा आहे व तत्त्वतः कोण आहे , याचे त्याला यथार्थ ज्ञान होते आणि माझी खरी ओळख झाल्यावर ; तो माझ्या ठायीच प्रवेश करतो .

विनोबांची गीताई :-

भक्तीनें तत्त्वतां ज्ञाणे कोण मी केवढा असें।

ह्यापरी मज ज्ञाणूनि माझ्यांत मिसळे मग ॥ १८ - ५५ ॥

सर्वकर्माणि अपि सदा कुर्वाणः मद् - व्यपाश्रयः ।

मद् - प्रसादात् अव - आप्नोति शाश्वतम् पदम् अव्ययम् ॥ १८ - ५६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वकर्माणि	Sarva-KarmaaNi	all actions	सम्पूर्ण कर्मों को	सर्व कर्मे
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
सदा	Sadaa	always	सदा	सतत
कुर्वाणः	KurvaaNaH	doing	करता हुआ	करणारा
मद् - व्यपाश्रयः	Mad - VyapaashrayaH	Taking refuge in Me	मेरे परायण हुआ कर्मयोगी तो	माझ्या आश्रयास आलेला
मद् - प्रसादात्	Mad - Prasaadaat	by My grace	मेरी कृपा से	माझ्या कृपेने
अव - आप्नोति	Ava - Aapnoti	obtains	प्राप्त हो जाता है	प्राप्त करून घेतो
शाश्वतम्	Shaashvatam	the eternal	सनातन	अक्षय
पदम्	Padam	abode	परम पद को	(परम) पद
अव्ययम्	Avyayam	indestructible	अविनाशी	अविनाशी

अन्वय :- मद् – व्यपाश्रयः सदा सर्वकर्माणि अपि कुर्वाणः मद् - प्रसादात् शाश्वतम् अव्ययम् पदम् अव - आप्नोति ॥ १८ - ५६ ॥

English translation:-

Performing all actions while always taking refuge in Me, by My grace, he reaches the eternal, indestructible abode.

हिन्दी अनुवाद :-

मेरा आश्रय लेनेवाला कर्मयोगी भक्त , सदा सब कर्म करता हुआ भी , मेरी कृपा से शाश्वत , अविनाशी पद को प्राप्त करता है ।

मराठी भाषान्तर :-

माझ्या ठिकाणी ज्याने आपली सर्व वृत्ती अर्पिली आहे , ज्याने केवळ माझाच आश्रय केला आहे ; असा ज्ञानी पुरुष , सर्व कर्मे नेहमी करीत असला तरी माझ्या कृपाप्रसादाने , अविनाशी , अक्षय पदाला प्राप्त होतो .

विनोबांची गीताई :-

करूनि हि सदा कर्मे सगळीं मज सेवुनी ।

पावे माझ्या कृपेनें तो अवीट पद शाश्वत ॥ १८ - ५६ ॥

चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मद् - परः ।

बुद्धियोगम् उपाश्रित्य मद् -चित्तः सततम् भव ॥ १८ - ५७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
चेतसा	Chetasaa	mentally / consciously	मन से	मनाने
सर्वकर्माणि	Sarva-KarmaaNi	all actions	सब कर्मों को	सर्व कर्मे
मयि	Mayi	in Me	मुझ में	माझ्या ठिकाणी
संन्यस्य	Sanyasya	having renounced	अर्पण कर के	अर्पण करून
मद् - परः	Mad – ParaH	regarding Me as supreme	मेरे परायण	मत्परायण
बुद्धियोगम्	Buddhi-Yogam	Yoga of discrimination	समबुद्धिरूप योग को	समबुद्धिरूप योग
उपाश्रित्य	Upaashritya	resorting to	अवलम्बन कर के	अवलंब करून
मद् -चित्तः	Mad-chittaH	with the mind fixed on Me	मुझ में चित्तवाला	माझ्या ठायी चित्त ठेवणारा
सततम्	Satatam	always	निरन्तर	नेहमी
भव	Bhava	be	हो	हो

अन्वय :- (त्वम्) सर्वकर्माणि चेतसा मयि संन्यस्य मद् – परः , (सन्) बुद्धियोगम् उपाश्रित्य सततम् मद् -चित्तः भव ॥ १८ - ५७ ॥

English translation:-

Consciously resigning all actions unto Me, regarding Me as supreme, resorting to Yoga of discrimination, fix your mind ever on Me.

हिन्दी अनुवाद :-

समस्त कर्मों को श्रद्धा और भक्ति पूर्वक मुझे अर्पण करो , मुझे अपना परम लक्ष मानकर मुझपर ही भरोसा रखो तथा निष्काम कर्मयोग का आश्रय लेकर निरन्तर मुझ में ही तुम चित्त लगा के रखो ।

मराठी भाषान्तर :-

विवेकबुद्धीने सर्व कर्मे मज ईश्वराच्या ठिकाणी अर्पण करून मत्परायण हो ; आणि समतोल बुद्धीयोगाचा आश्रय करून , माझ्या ठिकाणी नेहमी चित्त ठेव .

विनोबांची गीताई :-

मज मत्पर - वृत्तीनें सर्व कर्मे समर्पुनी ।
समत्व न ढळूं देतां चित्त माझ्यांत ठेव तूं ॥ १८ - ५७ ॥

मद् -चित्तः सर्व दुर्गाणि मद् - प्रसादात् तरिष्यसि ।

अथ चेत् त्वम् अहङ्कारात् न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ॥ १८ - ५८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मद् -चित्तः	Mad – ChittaH	fixing the mind on Me	मुझ में चित्तवाला होकर	माझ्या ठिकाणी चित्त असलेला (असा तू)
सर्व	Sarva	all	समस्त	सर्व
दुर्गाणि	DurgaaNi	obstacles	संकटों को (अनायास ही)	संकटे
मद् - प्रसादात्	Mad - Prasaadaat	by My grace	मेरी कृपा से	माझ्या कृपाप्रसादाने
तरिष्यसि	TariShyasi	shall overcome	पार कर जायगा	पार करशील
अथ	Atha	now	और	आणि
चेत्	Chet	if	यदि	जर
त्वम्	Tvam	you	तुम	तू
अहङ्कारात्	Ahankaaraat	from egoism	अहङ्कार के कारण मेरे वचनों को	अहंकारामुळे
न	Na	not	न	नाही
श्रोष्यसि	ShroShyasi	will listen	सुनोगे तो	(माझी वचने) ऐकशील
विनङ्क्ष्यसि	Vinankshyansi	shall perish	नष्ट हो जाओगे अर्थात् परमार्थ से भ्रष्ट हो जाओगे	(तू) नाश पावशील (परमार्थात भ्रष्ट होशील)

अन्वय :- (त्वम्) मद् -चित्तः (सन्) सर्वदुर्गाणि मद् - प्रसादात् तरिष्यसि । अथ त्वम् अहङ्कारात् न श्रोष्यसि चेत् , विनङ्क्ष्यसि ॥ १८ - ५८ ॥

English translation:-

Fixing your mind on Me, you will overcome all obstacles by My grace; however if unable to overcome egoism you will not listen Me, then you will perish.

हिन्दी अनुवाद :-

मुझ में चित्त लगाकर , तुम मेरी कृपा से सम्पूर्ण विघ्नों को पार कर जाओगे और यदि तुम अहंकारवश , मेरे इस उपदेश को नहीं सुनोगे ; तो नष्ट हो जाओगे अर्थात् परमार्थ से भ्रष्ट हो जाओगे ।

मराठी भाषान्तर :-

जर माझ्या ठिकाणी चित्त ठेवून राहशील , तर माझ्या कृपेने , संसारातील सर्व संकटांचे सहज उल्लंघन करशील . पण जर अहंकाराने , माझे न ऐकशील तर तुझा केवळ सर्वनाशच होईल .

विनोबांची गीताई :-

मग सर्व भयें माझ्या कृपेनें तरशील तूं ।
मीपणें हें न मानूनि पावशील विनाश चि ॥ १८ - ५८ ॥

यद् अहङ्कारम् आश्रित्य न योत्स्ये इति मन्यसे ।

मिथ्या एषः व्यवसायः ते प्रकृतिः त्वाम् नियोक्ष्यति ॥ १८ - ५९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यद्	Yad	if	जो तुम	जर
अहङ्कारम्	Ahankaaram	egoism	अहङ्कार का	अहंकार
आश्रित्य	Aashritya	having taken refuge in	आश्रय लेकर	आश्रय घेऊन
न	Na	not	नहीं	नाही
योत्स्ये	Yotsye	(I) will fight	मैं युद्ध करूँगा	युद्ध करशील
इति	Iti	thus	यह	असे
मन्यसे	Manyase	(you) think	मानना है	समजत आहेस
मिथ्या	Mithyaa	vain	झूठ है	खोटा
एषः	EshaH	this	यह	हा
व्यवसायः	VyavasaayaH	resolve	निश्चय	निश्चय
ते	Te	your	तेरा	तुझा
प्रकृतिः	PrakrutiH	nature	स्वभाव	स्वभाव
त्वाम्	Tvaam	you	तुझे	तुला
नियोक्ष्यति	Niyokshyati	will compel / constrain	जबरदस्ती युद्ध में लगा देगा	जबरदस्तीने (युद्ध) करावयास लावील

अन्वय :- यद् अहङ्कारम् आश्रित्य ' न योत्स्ये ' इति मन्यसे , (तत्) एषः ते व्यवसायः मिथ्या (एव अस्ति) , प्रकृतिः त्वाम् नियोक्ष्यति ॥ १८ - ५९ ॥

English translation:-

Out of egoism, if you resolve "I will not fight" then indeed vain is your resolve, as your nature will compel and constrain you to fight.

हिन्दी अनुवाद :-

यदि अहंकारवश तुम ऐसा सोच रहे हो कि, " मैं यह युद्ध नहीं करूँगा " तो तुम्हारा ऐसा सोचना बिलकूल झूठ है ; क्योंकि तुम्हारा क्षात्रधर्मजन्य स्वभाव , तुम्हें जबरदस्ती से युद्ध में लगा देगा ।

मराठी भाषान्तर :-

अहंकाराचा आश्रय करून " मी युद्ध करणार नाही " असे तू जर मानशील , तर तुझा हा निश्चय साफ खोटा आहे ; कारण तुझी प्रकृतीस्वभावजन्य क्षात्रवृत्ती , तुला स्वस्थ बसू न देता , जबरदस्तीने शेवटी युद्ध करण्यास भाग पाडेल .

विनोबांची गीताई :-

म्हणसी मी न झुंजें चि हें ज़ें मीपण घेउनी ।
तो निश्चय तुझा व्यर्थ स्वभाव करवील चि ॥ १८ - ५९ ॥

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।

कर्तुम् न इच्छसि यत् मोहात् करिष्यसि अवशः अपि तत् ॥ १८ - ६० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
स्वभावजेन	Svabhaavajena	born of own nature	स्वाभाविक	स्वाभाविक
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे कुन्तीपुत्र अर्जुन !	हे कुन्तीपुत्रा अर्जुना !
निबद्धः	NibaddhaH	bound	बँधा हुआ	बद्ध
स्वेन	Svena	by your own	अपने पूर्वकृत	आपल्या (पूर्वकृत)
कर्मणा	KarmaNaa	by action	कर्म से	कर्माने
कर्तुम्	Kartum	to do	करना	करण्यास
न	Na	not	नहीं	नाही
इच्छसि	Ichchhasi	(you) wish	चाहता	इच्छा करतो
यत्	Yat	that	जिस कर्म को	जे (कर्म)
मोहात्	Mohaat	from delusion	मोह के कारण	मोहामुळे
करिष्यसि	KariShyasi	(you) will do	तुम करोगे	करशील
अवशः	AvashaH	uncontrollably being helpless	परवश होकर	परतंत्र होऊन
अपि	Api	even	भी	(कर्म) सुद्धा
तत्	Tat	that	उस को	ते

अन्वय :- हे कौन्तेय ! (यतः) स्वभावजेन स्वेन कर्मणा निबद्धः (त्वम्) यत् मोहात् कर्तुम् न इच्छसि , तत् अवशः (सन्) अपि करिष्यसि ॥ १८ - ६० ॥

English translation:-

O Arjuna! Bound by action born of your own nature, that which from delusion you wish not to do, even that you shall do helplessly against your own will.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! तुम अपने स्वाभाविक कर्म के संस्काररूपी बन्धनों से बंधे हो , अतः भ्रमवश जिस काम को तुम नहीं करना चाहते हो ; उसे भी तुम विवश होकर करोगे ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! ज्या अज्ञानाने , तू युद्धकर्म करू इच्छित नाहीस असे म्हणतोस , तरी स्वाभाविक कर्माने बद्ध असल्यामुळे ; तेच कर्म तुला परतंत्राने म्हणजेच प्रकृतीच्या अधीन होऊन करावे लागेल .

विनोबांची गीताई :-

स्वभाव - सिद्ध कर्मानें आपुल्या बांधिलास तू ।
ज़ें टाळूं पाहसी मोहें अवश्य करिशील तें ॥ १८ - ६० ॥

ईश्वरः सर्व भूतानाम् हृद् - देशे अर्जुन तिष्ठति ।

भ्रामयन् सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥ १८ - ६१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ईश्वरः	IishvaraH	The Lord	अन्तर्यामी परमेश्वर	परमेश्वर
सर्व	Sarva	all	सब	सर्व
भूतानाम्	Bhuutaanaam	Of beings	प्राणियों के	प्राण्यांच्या
हृद् - देशे	Hrud - Deshe	in the hearts	हृदय में	हृदयात
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
तिष्ठति	TiShThati	dwells	स्थित है	राहतो
भ्रामयन्	Bhraamayan	causing to revolve	भ्रमण करत हुआ	फिरवीत
सर्व	Sarva	all	सब	सर्व
भूतानि	Bhuutaani	beings	प्राणियों को	प्राण्यांना
यन्त्रारूढानि	Yantra-AaruuDhaani	mounted on a machine	शरीररूप यन्त्र में आरूढ हुए	शरीररूपी यंत्रावर आरूढ असणाऱ्या
मायया	Maayayaa	by illusive nature	अपनी माया से (उन के कर्मों के अनुसार)	स्वतःच्या मायेने

अन्वय :- हे अर्जुन ! यन्त्रारूढानि सर्व भूतानि मायया भ्रामयन् ईश्वरः सर्व भूतानाम् हृद् देशे तिष्ठति ॥ १८ - ६१ ॥

English translation:-

O Arjuna! The Lord dwells in the hearts of all beings and by his Maya causes all beings to revolve as though mounted on a machine.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! ईश्वर सभी प्राणियों के अन्तकरण में स्थित होकर, अपनी माया के द्वारा, प्राणियों को यन्त्र पर आरूढ कठपुतली की तरह घुमाते रहता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! ईश्वर सर्व प्राणिमात्रांच्या हृदयात वास करतो आणि आपल्या मायेने यंत्रावर चढविलेल्या बाहुल्यांप्रमाणे सर्व प्राणिमात्रांना फिरवतो.

विनोबांची गीताई :-

राहिला सर्व भूतांच्या हृदयीं परमेश्वर।
मायेनें चाळवी त्यांस ज़णूं यंत्रांत घालुनी ॥ १८ - ६१ ॥

तम् एव शरणम् गच्छ सर्व भावेन भारत ।

तद् प्रसादात् पराम् शान्तिम् स्थानम् प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥ १८ - ६२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तम्	Tam	to Him	उसी परमेश्वर की	त्या (परमेश्वराला)
एव	Eva	even	ही	च
शरणम्	ShaRaNam	refuge	शरण में	शरण
गच्छ	Gachchha	seek	तुम जाओ	जा
सर्व - भावेन	Sarva - Bhaavena	with all your being	सब प्रकार से	सर्व भावाने
भारत	Bhaarata	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
तद् - प्रसादात्	Tad - Prasaadaat	By His grace	उस परमात्मा की कृपा से ही तुम	त्याच्या (परमेश्वराच्या कृपेने)
पराम्	Paraam	supreme	परम	श्रेष्ठ
शान्तिम्	Shaantim	peace	शान्ति को तथा	शांती
स्थानम्	Sthaanam	abode	परम धाम को	परमधाम
प्राप्स्यसि	Praapsyasi	shall attain	प्राप्त हो जाओगे	प्राप्त करून घेशील
शाश्वतम्	Shaashvatam	eternal	सनातन	सनातन

अन्वय :- हे भारत ! (त्वम्) तम् एव सर्व भावेन शरणम् गच्छ। तद् प्रसादात् पराम् शान्तिम् शाश्वतम् स्थानम् (च) प्राप्स्यसि ॥ १८-६२ ॥

English translation:-

O Arjuna! Seek refuge in Him alone with all your heart (being). By His grace, you shall attain supreme peace, the eternal Abode.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन! तुम पराभक्ति-भाव से, उस ईश्वर की ही शरण में जाओ। उसकी कृपा से, तुम परम-शान्ति और शाश्वत परमधाम को प्राप्त कर पाओगे।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना! अनन्यभावाने त्याच परमेश्वराला तू शरण जा. त्याच्या कृपाप्रसादामुळे, तुला परम शांती व शाश्वत पद प्राप्त होईल.

विनोबांची गीताई :-

त्यातें चि सर्व भावें तूं जाईं शरण पावसी।
त्याच्या कृपा बळें थोर शांतीचें स्थान शाश्वत ॥ १८-६२ ॥

इति ते ज्ञानम् आख्यातम् गुह्यात् गुह्यतरम् मया ।

विमृश्य एतत् अशेषेण यथा इच्छसि तथा कुरु ॥ १८ - ६३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इति	Iti	thus	इस प्रकार यह	अशा प्रकारे
ते	Te	to you	तुम से	तुला
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
आख्यातम्	Aakhyaatam	has been declared	कह दिया है	सांगितले आहे
गुह्यात्	Guhyaat	than the secret	गोपनीय से भी	गोपनीय गोष्टीपेक्षा
गुह्यतरम्	Guhyaataram	more secret	अति गोपनीय	अति गोपनीय
मया	Mayaa	by Me	मैं ने	मी
विमृश्य	Vimrushya	reflecting over	भलीभाँति सोच समझकर	चांगल्याप्रकारे विचार करून
एतत्	Etat	this	इस रहस्ययुक्त ज्ञान को	या (रहस्ययुक्त ज्ञानाचा)
अशेषेण	AsheSheNa	fully	पूर्णतया	पूर्णपणे
यथा	Yathaa	as	जैसे	जशी
इच्छसि	Ichchhasi	you wish	तुम चाहते हो	तुझी इच्छा असेल
तथा	Tathaa	so	वैसे ही	त्याप्रमाणेच
कुरु	Kuru	act	करो	कर

अन्वय :- इति गुह्यात् गुह्यतरम् ज्ञानम् मया ते आख्यातम् , एतत् अशेषेण विमृश्य , यथा इच्छसि तथा कुरु ॥ १८ - ६३ ॥

English translation:-

Thus the knowledge more profound than all profound known so far, has been declared to you by Me. Reflect upon it fully and act as you wish.

हिन्दी अनुवाद :-

मैंने , गोपनीय से भी अति गोपनीय ज्ञान , तुमसे कहा है । अब , तुम इसपर अच्छी तरहसे , पूर्णतया विचार करने के बाद ; तुम्हारी जैसी इच्छा हो , वैसा करो ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! गुह्याहून अति गुह्य ज्ञान मी तुला सांगितले आहे . त्यावर पूर्णपणे विचार करून , तुझी इच्छा असेल , तसे तू कर .

विनोबांची गीताई :-

असें गूढाहुनी गूढ बोलिलों ज्ञान मी तुज ।
ध्यानीं घेउनि तें सारें स्वेच्छेनें योग्य तें करीं ॥ १८ - ६३ ॥

सर्वगुह्यतमम् भूयः श्रृणु मे परमम् वचः ।

इष्टः असि मे दृढम् इति ततः वक्ष्यामि ते हितम् ॥ १८ - ६४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वगुह्यतमम्	Sarva-guhyatamam	the most secret of all	सम्पूर्ण गोपनीयों से अति गोपनीय	सर्व गोपनीय गोष्टींमध्ये अतिशय गोपनीय
भूयः	BhuuyaH	again	फिर एक बार अन्तिम	पुन्हा (एकदा शेवटचे)
श्रृणु	ShruNu	listen	तुम सुनो	(तू) ऐक
मे	Me	my	मेरे	माझे
परमम्	Paramam	supreme	परम रहस्ययुक्त	परम रहस्याने युक्त
वचः	VachaH	word	वचन को	वचन
इष्टः	IShTaH	beloved	प्रिय	प्रिय
असि	Asi	you are	हो	आहेस
मे	Me	of Me	मुझे (तुम)	मला
दृढम्	DruDham	firmly	अतिशय	अतिशय
इति	Iti	thus	यह	अशा प्रकारे
ततः	TataH	therefore	इसलिये	त्यामुळे
वक्ष्यामि	Vakshyaami	I will speak	मैं कहूँगा	मी सांगेन
ते	Te	your	तुम्हारे	तुला
हितम्	Hitam	beneficial	परम हितकारक वचन	हितकारक (वचन)

अन्वय :- सर्वगुह्यतमम् परमम् वचः मे भूयः शृणु । मे दृढम् इष्टः असि , इति ततः ते हितम् वक्ष्यामि ॥ १८ - ६४ ॥

English translation:-

Listen again to My supreme word, the profoundest of all. You are beloved of Me and steadfast of heart; therefore, I will speak what is beneficial to you.

हिन्दी अनुवाद :-

मेरे इस समस्त गोपनीयों से अति गोपनीय परम उपदेश को तुम फिर एक आखरी बार सुनो । तुम मुझे सब से अत्यन्त प्रिय हो ; इसलिये , मैं तुम्हारे केवल हित की बात कहूँगा ।

मराठी भाषान्तर :-

माझे सर्व गुह्यातील गुह्य वचन पुन्हा एकदा ऐक . तू मला अतिशय प्रिय आहेस , म्हणून मी तुझ्या हिताची गोष्ट तुला सांगतो .

विनोबांची गीताई :-

सर्व गूढांतलें पुन्हां उत्तम वाक्य हें ।
हितार्थ सांगतों ऐक फार आवडती मज ॥ १८ - ६४ ॥

मन् - मनाः भव मद् - भक्तः मद् - याजी माम् नमस्कुरु ।

माम् एव एष्यसि सत्यम् ते प्रतिजाने प्रियः असि मे ॥ १८ - ६५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मन् - मनाः	Man - ManaaH	with mind fixed on Me	मुझ में स्थिर मनवाला	माझ्याठिकाणी मन असणारा
भव	Bhava	be	हो	हो
मद् - भक्तः	Mad - BhaktaH	devoted to Me	मेरा भक्त बनो	माझा भक्त
मद् - याजी	Mad - Yaajii	sacrifice to Me	मेरा पूजन करनेवाला बनो	माझे पूजन करणारा
माम्	Maam	Me	मुझ को	मला
नमस्कुरु	Namaskuru	bow down	प्रणाम करो	प्रणाम कर
माम्	Maam	to Me	मुझे	मला
एव	Eva	only	ही	च
एष्यसि	Eshyasi	you shall come	प्राप्त हो जाओगे	प्राप्त करून घेशील
सत्यम्	Satyam	truth	यह सत्य मैं	सत्य
ते	Te	to you	तुमसे	तुला
प्रतिजाने	Pratijaane	promise	प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ	मी प्रतिज्ञेवर सांगतो
प्रियः	PriyaH	dear	(क्योंकि तुम अत्यन्त) प्रिय	प्रिय
असि	Asi	are	हो	आहेस
मे	Me	to Me	मुझे	मला

अन्वय :- मन् - मनाः , मद् - भक्तः , मद् - याजी (च) भव , माम् नमस्कुरु (एवम् कृत्वा त्वम्) माम् एव एष्यसि । (इति) ते सत्यम् प्रतिजाने , (यतः त्वम्) मे प्रियः असि ॥ १८ - ६५ ॥

English translation:-

Fix your mind on Me, be devoted to Me, sacrifice to Me, prostrate before Me truly I promise you shall come to Me alone as you are dear to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

तुम मुझ में अपना मन लगाओ , मेरा भक्त बनो , मेरी पूजा करो और मुझे प्रणाम करो । ऐसा करने से , तुम मुझे अवश्य ही प्राप्त करोगे । मैं यह सत्य प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ ; क्योंकि तुम मेरे अत्यन्त प्रिय मित्र हो ।

मराठी भाषान्तर :-

माझ्या ठायी मन ठेव , माझी भक्ती कर , माझी पूजा कर , मला वंदन कर म्हणजे तू मलाच येऊन पोचशील . हे सत्य मी तुला प्रतिज्ञापूर्वक सांगतो, कारण तू मला प्रिय आहेस .

विनोबांची गीताई :-

प्रेमानें ध्यास घेऊनि यजीं मज़ नमीं मज़ ।

प्रिय तूं मिळसी मातें प्रतिज्ञा ज़ाण सत्य ही ॥ १८ - ६५ ॥

सर्व धर्मान् परित्यज्य माम् एकम् शरणम् व्रज ।

अहम् त्वा सर्व पापेभ्यः मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ १८ - ६६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्व	Sarva	all	सम्पूर्ण	सर्व
धर्मान्	Dharmaan	duties	धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझ में	कर्तव्य कर्मे
परित्यज्य	Parityajya	having abandoned	त्याग कर तुम केवल	त्याग करून
माम्	Maam	to Me	मुझ सर्वशक्तिमान् सर्वाधार परमेश्वर की ही	मला (परमेश्वराला)
एकम्	Ekam	alone	एक	एका
शरणम्	ShaRaNam	refuge	शरण में	शरण
व्रज	Vraja	take	आ जाओ	ये
अहम्	Aham	I	मैं	मी
त्वा	Tvaam	to you	तुम्हे	तुला
सर्व	Sarva	all	सम्पूर्ण	सर्व
पापेभ्यः	PaapebhyaH	sins	पापों से	पापांतून
मोक्षयिष्यामि	Moksha-YiShyaami	will liberate	मुक्त कर दूँगा	मुक्त करीन
मा	Maa	do not	मत करो	करू नकोस
शुचः	ShuchaH	grieve	तुम व्यर्थ शोक	शोक

अन्वय :- (त्वम्) सर्व धर्मान् परित्यज्य माम् एकम् शरणम् व्रज , अहम् त्वाम् सर्व पापेभ्यः मोक्ष्ययिष्यामि (त्वम्) मा शुचः ॥ १८ - ६६ ॥

English translation:-

Renounce all other obligatory duties and take refuge in Me alone. I will liberate you from all sins. Do not grieve.

हिन्दी अनुवाद :-

सम्पूर्ण पाप और पुण्य कार्यों का परित्याग करके , तुम केवल मेरी ही शरण में आ जाओ । व्यर्थ शोक मत करो ; क्योंकि मैं तुम्हें समस्त पापों से अर्थात् कर्म के बन्धनों से मुक्त कर दूँगा ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व धर्म व अधर्म अशा दोन्ही प्रकारच्या कर्मांचा परित्याग करून तू मला एकट्यालाच शरण ये . मी तुला सर्व पापांपासून मुक्त करीन . तू मुळीच शोक करू नकोस .

विनोबांची गीताई :-

सगळे धर्म सोडूनि एका शरण ये मज़ ।

ज़ाळीन सर्व मी पापें तुझीं शोक करूं नको ॥ १८ - ६६ ॥

इदम् ते न अतपस्काय न अभक्ताय कदाचन ।

न च अशुश्रुषवे वाच्यम् न च माम् यः अभ्यसूयति ॥ १८ - ६७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इदम्	Idam	this	यह	हे
ते	Te	by you	तुझे	तू
न	Na	not	न तो	नको (सांगू नकोस)
अतपस्काय	A-Tapasyaaya	to one who is devoid of austerity	तपरहित मनुष्य से	तपरहित मनुष्याला
न	Na	not	न	नाही
अभक्ताय	A-Bhaktaaya	to one who is not devoted	भक्तिरहित मनुष्य से	भक्तिरहित माणसाला
कदाचन	Kadaachana	ever	किसी भी काल में	कधीही
न	Na	not	न	नाही
च	Cha	and	तथा	तसेच
अशुश्रुषवे	A-ShushruShave	to one who does not render service	बिना सुनने की इच्छावाले से ही	ऐकण्याची इच्छा नसणाऱ्याला
वाच्यम्	Vaachyam	to be spoken	कहना चाहिये	सांगावे
न	Na	not	न	नाही
च	Cha	and	तथा	तसेच
माम्	Maam	Me	मुझमें	मला
यः	YaH	who	जो	जो (माणूस)
अभ्यसूयति	Abyasuuyati	one who cavils at	दोषदृष्टि रखता है	दोषदृष्टी बाळगतो

अन्वय :- इदम् ते न अतपस्काय, (च) न अभक्ताय , न च अशुश्रुषवे, न च यः माम् अभ्यसूयति (तस्मै) कदाचन वाच्यम् ॥ १८ - ६७ ॥

English translation:-

This is never to be spoken by you to one who is devoid of austerities, nor to one who is not devoted, nor to one who does not render service, nor to one who speaks ill of Me.

हिन्दी अनुवाद :-

गीता के इस गुह्यतम ज्ञान को, तपरहित और भक्तिरहित व्यक्तियों को अथवा जो इसे सुनना नहीं चाहते हों, अथवा जिन्हें मुझ में श्रद्धा न हो; उन लोगों से कभी नहीं कहना चाहिये।

मराठी भाषान्तर :-

हे गुह्यज्ञान तपोहीनाला, भक्तिहीनाला, ऐकण्याची इच्छा नसणाऱ्याला; तसेच माझा मत्सर व निंदा करणाऱ्याला, केव्हाही सांगू नकोस.

विनोबांची गीताई :-

न कधीं हें कधीं त्यास तपो हीन अभक्त ज़ो।
श्रवणेच्छा नसे ज्यास माझा मत्सर ज़ो करी ॥ १८ - ६७ ॥

यः इमम् परमम् गुह्यम् मद् भक्तेषु अभिधास्यति ।

भक्तिम् मयि पराम् कृत्वा माम् एव एष्यति असंशयः ॥ १८ - ६८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यः	YaH	he who	जो पुरुष	जो (पुरूष)
इमम्	Imam	this	इस	हा
परमम्	Paramam	supreme	परम	परमश्रेष्ठ
गुह्यम्	Guhyam	secret	रहस्ययुक्त गीताशास्त्र को	गोपनीय
मद्	Mad	to my	मेरे	माझ्या
भक्तेषु	BhakteShu	devotees	भक्तों मे	भक्तांना
अभिधास्यति	Abhidhaasyati	shall declare	निष्कामभाव से प्रेमपूर्वक प्रचार करेगा	सांगेल (निष्कामभावाने प्रचार करील)
भक्तिम्	Bhaktim	devotion	प्रेम से पूजा	प्रेम
मयि	Mayi	in Me	मुझ में	माझ्यावर
पराम्	Paraam	supreme	परम	परम
कृत्वा	Krutvaa	having done	कर के	करून
माम्	Maam	to Me	मुझ को	मला
एव	Eva	only	ही	च
एष्यति	Eshyati	shall come	प्राप्त होगा	प्राप्त करून घेईल
असंशयः	AsaMshayaH	without any doubt	इस में कोई संदेह नहीं है	संशयरहित

अन्वय :- यः इदम् (इमम्) परमम् गुह्यम् (ज्ञानम्) मद् - भक्तेषु अभिधास्यति (सः) मयि पराम् भक्तिम् कृत्वा , असंशयः (सन्) माम् एव एष्यति ॥ १८ - ६८ ॥

English translation:-

He, who with supreme devotion to Me, will teach this immensely profound philosophy to My devotees; shall come to Me alone without any doubt.

हिन्दी अनुवाद :-

जो व्यक्ति इस गीतारूप परम गुह्य ज्ञान का , मेरे भक्तजनों के बीच , प्रेमपूर्वक - निष्कामभाव से प्रचार और प्रसार करेगा ; वह मेरी यह सर्वोत्तम पराभक्ति कर के , निःसंदेह मुझे ही प्राप्त होगा ।

मराठी भाषान्तर :-

जो हे माझे परम गुह्यज्ञान माझ्या भक्तांना सांगेल , तो माझी परमभक्ती करून , निःशंक होऊन ; माझ्याच स्वरूपाला प्राप्त होईल .

विनोबांची गीताई :-

सांगेल गूज हें थोर माझ्या भक्त गणांत जो ।
तो त्या परम भक्तीनें मिळेल मज निश्चित ॥ १८ - ६८ ॥

न च तस्मात् मनुष्येषु कश्चित् मे प्रियकृत्तमः ।

भविता न च मे तस्माद् अन्यः प्रियतरः भुवि ॥ १८ - ६९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं है	नाही
च	Cha	and	और	तसेच
तस्मात्	Tasmaat	other than he	उस से बढकर	त्यापेक्षा
मनुष्येषु	ManuShyeShu	among men	मनुष्यों में	माणसांमध्ये
कश्चित्	Kashchit	anyone	कोई	कोणीही
मे	Me	My	मेरा	माझे
प्रियकृत्तमः	Priya-KruttamaH	one who does dearest service	प्रिय कार्य करनेवाला	प्रिय कार्य करणारा
भविता	Bhavitaa	shall be	भविष्य में होगा भी	भविष्यात होणारा
न	Na	not	नहीं	नाही
च	Cha	and	तथा	तसेच
मे	Me	My	मेरा	माझा
तस्माद्	Tasmaad	other than he	उस से बढकर	त्याच्यापेक्षा अधिक
अन्यः	AnyaH	anyone	दूसरा कोई	दुसरा कोणीही
प्रियतरः	PriyataraH	dearer	प्रिय	प्रिय
भुवि	Bhuvi	on the earth	पृथ्वी में	पृथ्वीवर

अन्वय :- मनुष्येषु च कश्चित् तस्मात् प्रियकृत्तमः मे न (अस्ति); तस्माद् अन्यः भुवि प्रियतरः मे न च भविता ॥ १८-६९ ॥

English translation:-

There is none among men who does dearer service to Me than he does nor shall there be another on the earth dearer to Me other than him.

हिन्दी अनुवाद :-

उस से बढकर, मेरा प्रिय कार्य करनेवाला, कोई मनुष्य नहीं होगा और न मेरा उससे ज्यादा प्रिय, इस पृथ्वीतल पर, कोई दूसरा होगा।

मराठी भाषान्तर :-

यापेक्षा माझे अधिक प्रिय कार्य करणारा, सर्व लोकांत दुसरा कोणीही नाही; आणि त्याच्याहून मला जास्त प्रिय असा, या पृथ्वीवर दुसरा कोणीही होणार नाही.

विनोबांची गीताई :-

कोणी अधिक त्याहूनि माझें प्रिय करी चि ना।
जगीं आवडता कोणी न होय मज त्याहुनी ॥ १८-६९ ॥

अध्येष्यते च यः इमम् धर्म्यम् संवादम् आवयोः ।

ज्ञानयज्ञेन तेन अहम् इष्टः स्याम् इति मे मतिः ॥ १८ - ७० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अध्येष्यते	AdhyeShyate	shall study	पढेगा (अध्ययन करेगा)	अध्ययन करील
च	Cha	and	और	सुद्धा
यः	YaH	he who	जो पुरुष	जो (पुरूष)
इमम्	Imam	this	इस	हे
धर्म्यम्	Dharmyam	sacred	धर्ममय	धर्ममय
संवादम्	SaMvaadam	dialogue	संवादरूप गीताशास्त्र को	संवाद
आवयोः	AavayoH	of ours	हम दोनों के	आपल्या दोघांचे
ज्ञानयज्ञेन	Dnyaana-Yadnena	by the sacrifice of wisdom	ज्ञानयज्ञ से	ज्ञानयज्ञाने
तेन	Tena	by him	उस के द्वारा	त्याने
अहम्	Aham	I	मैं	मी
इष्टः	IShTaH	worshipped	पूजित	पूजित
स्याम्	Syaam	I shall have been	होऊँगा	होईन
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
मे	Me	My	मेरा	माझे
मतिः	MatiH	conviction	दृढ विश्वास है	मत आहे

अन्वय :- यः च आवयोः इमाम् धर्म्यम् संवादम् अध्येष्यते, तेन ज्ञानयज्ञेन अहम् इष्टः स्याम् इति मे मतिः ॥ १८-७० ॥

English translation:-

And he who will study this sacred dialogue of ours, by him I shall have been worshipped by sacrifice of knowledge; such is my firm belief.

हिन्दी अनुवाद :-

जो व्यक्ति हम दोनों के इस धर्ममय संवाद का अध्ययन करेगा, उस के द्वारा मैं ज्ञानयज्ञ से पूजित होऊँगा; यह मेरा दृढ विश्वासपूर्वक वचन है।

मराठी भाषान्तर :-

जो आपल्या दोघांच्या, या धर्मानुकूल संवादाचे म्हणजेच गीताशास्त्राचे अध्ययन करील; त्याने ज्ञानयज्ञाने माझे पूजनच केले, असे मी समजतो.

विनोबांची गीताई :-

हा धर्म रूप संवाद ज़ो अभ्यासील आमुचा।
मी मानीं मज़ तो पूजी ज्ञान यज्ञ करूनियां ॥ १८-७० ॥

श्रद्धावान् अनसूयः च शृणुयात् अपि यः नरः ।

सः अपि मुक्तः शुभान् लोकान् प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम् ॥ १८ - ७१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रद्धावान्	Shaddhaavaan	full of faith	श्रद्धायुक्त	श्रद्धाळू
अनसूयः	AnasuuyaH	free from malice	दोष दृष्टी से रहित होकर (इस गीताशास्त्र का)	दोषदृष्टीने रहित गीताशास्त्राचे
च	Cha	and	और	आणि
शृणुयात्	ShruNuyaat	may listen	श्रवण करेगा	श्रवण करील
अपि	Api	even	भी	ही
यः	YaH	he who	जो	जो
नरः	NaraH	man	मनुष्य	मनुष्य
सः	SaH	he	वह	तो
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
मुक्तः	MuktaH	liberated	पापों से मुक्त होकर	(पापांतून) मुक्त
शुभान्	Shubhaan	happy	पवित्र और श्रेष्ठ	श्रेष्ठ
लोकान्	Lokaan	worlds	लोकों को	लोकांना
प्राप्नुयात्	Praapnuyaat	shall attain	प्राप्त होगा	प्राप्त करून घेईल
पुण्यकर्मणाम्	PuNya-KarmaaNam	of those of righteous and meritorious deeds	उत्तम कर्म करनेवालों के	उत्तम कर्म करणाऱ्यांच्या

अन्वय :- श्रद्धावान् अनसूयः च यः नरः (इदम्) शृणुयात् अपि, सः अपि मुक्तः (सन्) पुण्यकर्मणाम् शुभान् लोकान् प्राप्नुयात् ॥ १८-७१ ॥

English translation:-

And even the man who listens imbued with full faith, free from malice and liberated from evil, even he shall attain the worlds of those of righteous and meritorious deeds.

हिन्दी अनुवाद :-

तथा जो श्रद्धापूर्वक, बिना आलोचना किए, इसे सुनेगा; वह भी सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर, पुण्यवान् लोगों के, शुभ लोकों को प्राप्त होगा।

मराठी भाषान्तर :-

जो श्रद्धावान पुरुष, असूयारहित होऊन हा संवाद म्हणजेच गीतेचे पठण नुसते ऐकेल; तोही पापमुक्त होऊन, पुण्यकर्मे करणाऱ्यांच्या उत्तम लोकांना प्राप्त होईल.

विनोबांची गीताई :-

हें ऐकेल ज़ो कोणी श्रद्धेनें द्वेष सोडुनी।
पावेल कर्म पूतांची तो हि निर्वेध सद्-गति ॥ १८-७१ ॥

कच्चित् एतत् श्रुतुम् पार्थ त्वया एकाग्रेण चेतसा ।

कच्चित् अज्ञानसंमोहः प्रनष्टः ते धनञ्जय ॥ १८ - ७२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कच्चित्	Kashchit	whether	क्या	काय
एतत्	Etat	this	इस गीताशास्त्र को	हे (गीताशास्त्र)
श्रुतुम्	Shrutum	heard	श्रवण किया ?	ऐकलेस
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
त्वया	Tvayaa	by you	तूने	तू
एकाग्रेण	EkaagreNa	by single pointed concentration	एकाग्र	एकाग्रतेने
चेतसा	Chetasaa	by mind	चित्त से	चित्ताने
कच्चित्	kachchit	whether	क्या	काय
अज्ञानसंमोहः	Adnyaana - SaMmohaH	deep delusion of ignorance	अज्ञान से उत्पन्न मोह	अज्ञानजनित मोह
प्रनष्टः	PranaShTaH	destroyed	नष्ट हो गया	नष्ट झाला
ते	Te	you	तेरा	तुझा
धनञ्जय	Dhananjaya	O Arjuna!	हे धनञ्जय !	हे धनंजया !

अन्वय :- हे पार्थ ! त्वया एतत् एकाग्रेण चेतसा श्रुतुम् कच्चित् ? हे धनञ्जय ! ते अज्ञानसंमोहः प्रनष्टः कच्चित् ? ॥ १८ - ७२ ॥

English translation:-

O Arjuna! Has this been heard by you by single pointed concentration of mind? Has the deep delusion of ignorance been destroyed, O dear Arjuna?

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! क्या तुमने एकाग्रचित्त होकर इस गीताशास्त्रको अच्छी तरह सुना ? और हे धनंजय ! क्या तुम्हारा अज्ञानजनित भ्रम पूर्ण रूपसे नष्ट हुआ ?

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! हे गुह्यज्ञान तू एकाग्र चित्ताने ऐकलेस ना ? आणि हे धनंजया , अज्ञानामुळे निर्माण झालेला तुझा अविवेक , आता सर्वथा नष्ट झाला ना ?

विनोबांची गीताई :-

तूं हें एकाग्र चित्तानें अर्जुना ऐकिलेंस कीं ।
अज्ञान रूप तो मोह गेला संपूर्ण कीं तुझा ॥ १८ - ७२ ॥

अर्जुन उवाच ।

नष्टः मोहः स्मृतिः लब्ध्वा त्वत् प्रसादात् मया अच्युत ।

स्थितः अस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनम् तव ॥ १८ - ७३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
नष्टः	NaShTaH	destroyed	नष्ट हो गया और	नष्ट झाला आहे
मोहः	MohaH	delusion	भ्रम	अज्ञान
स्मृतिः	SmrutiH	memory	कर्तव्यधर्म स्वरूप ज्ञान	(मला माझ्या कर्तव्यधर्माची) जाणीव
लब्ध्वा	Labdhvaa	gained	प्राप्त हुआ है	प्राप्त झाली आहे
त्वत्	Tvat	by Your	आप की	आपल्या
प्रसादात्	Prasaadaat	grace	कृपा से	कृपेमुळे
मया	Mayaa	By me	मुझे	माझा
अच्युत	Achyuta	O Krishna, the one who has never fallen from his highest state	अपने कर्तव्यधर्म न ढलनेवाले श्रीकृष्ण !	आपल्या कर्तव्यधर्मापासून न ढळणाऱ्या हे श्रीकृष्णा !
स्थितः	SthitaH	firm	अविचलित स्थितपद	स्थित
अस्मि	Asmi	I am	हूँ	मी आहे
गतसंदेहः	Gata-SaMdehaH	doubt dispelled	संशयरहित होकर	संशयरहित होऊन
करिष्ये	KariShye	I will do / follow	पालन करूँगा	मी पाळीन (युद्ध करीन)
वचनम्	Vachanam	word / advice	आज्ञा का	आज्ञा
तव	Tava	Your	आप की	आपली

अन्वय :- अर्जुनः उवाच - हे अच्युत त्वत् प्रसादात् (मे) मोहः नष्टः , मया स्मृतिः लब्ध्वा , (अहम्) गतसंदेहः स्थितः अस्मि , (इदानीम्) तव वचनम् करिष्ये ॥ १८ - ७३ ॥

English translation:- Arjuna said, "O Krishna! My delusion is destroyed. I have gained my memory (of my obligatory duties yet to be performed by me) by Your grace. Now I am firm from my conviction. I am free from any sort of doubt. I shall act according to Your sound advice."

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने अन्तिमपूर्वक कहा , " अपने कर्तव्यधर्म से , कभी भी न ढलनेवाले हे श्रीकृष्ण ! आप की कृपा से , मेरा सारा भ्रम दूर हो गया है और मुझे अपने कर्तव्यधर्म का यथावत् ज्ञान प्राप्त हो गया है। अब मैं संशय रहित हो गया हूँ और आपकी आज्ञा का पूर्णरूप से मैं पालन करूँगा - अर्थात् युद्ध करूँगा।"

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुन म्हणाला , " हे श्रीकृष्णा ! तुझ्या कृपाप्रसादाने , माझे अज्ञान पार नाहीसे झाले आहे . माझा कर्तव्यधर्म जागा झाला आहे . माझा संशय पूर्णपणे फिटून , मी निःसंशय झालो आहे . आता तुझ्या आज्ञेचे मी पालन करीन , म्हणजेच युद्ध करीन ."

विनोबांची गीताई :-

मोह मेला चि तो देवा कृपेनें स्मृति लाभली।
झालों निःशंक मी आतां करीन म्हणसी तसें ॥ १८ - ७३ ॥

सञ्जय उवाच ।

इति अहम् वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।

संवादम् इमम् अश्रौषम् अद् - भुतम् रोमहर्षणम् ॥ १८ - ७४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सञ्जय	Sanjaya	Sanjay	सञ्जय ने	संजय
उवाच	Uvaacha	said	कहा	बोलला
इति	Iti	thus	इस प्रकार	अशा प्रकारे
अहम्	Aham	I	मैं ने	मी
वासुदेवस्य	Vaasudevasya	of Krishna	श्रीवासुदेव के	श्री वासुदेवाचा
पार्थस्य	Paarthasya	Of Arjuna	अर्जुन के	अर्जुनाचा
च	Cha	and	और	आणि
महात्मनः	MahaatmanaH	enlightened ones	महात्मा	महात्म्यांचा
संवादम्	SaMvaadam	dialogue	संवाद को	संवाद
इमम्	Imam	this	इस	हा
अश्रौषम्	AshrauSham	I have heard	सुना	ऐकला
अद् - भुतम्	Ad-Bhutam	wonderful	अद्भुत रहस्ययुक्त	अद्भुत आणि रहस्ययुक्त
रोमहर्षणम्	Roma-HarShaNam	which causes the hair to stand on end	रोमाञ्चकारक	रोमांचकारक

अन्वय :- सञ्जय उवाच । इति अहम् वासुदेवस्य महात्मनः पार्थस्य च इमम् (इदम्) अद्-भुतम् रोमहर्षणम् संवादम् अश्रौषम् ॥ १८-७४ ॥

English translation:-

Sanjay said, " Thus I have heard this wonderful dialogue between enlightened ones i.e. Krishna and Arjuna, causing my hair to stand on end".

हिन्दी अनुवाद :-

संजय ने अन्तिमपूर्वक कहा, " इस प्रकार मैं ने भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन इन दोन महान आत्मों के बीच यह अद्भुत् और रोमांचकारी संवाद सुना ।"

मराठी भाषान्तर :-

संजय धृतराष्ट्राला म्हणाला, " याप्रमाणे , मी वासुदेव - श्रीकृष्ण व अर्जुन , या महात्म्यांचा हा आश्चर्यकारक व अंगावर रोमांच उभे करणारा संवाद ऐकला . "

विनोबांची गीताई :-

असा कृष्णार्जुनांचा हा झाला संवाद अद्-भुत ।
थोरांचा ऐकिला तो मीं नाचवी रोम रोम ज़ो ॥ १८-७४ ॥

व्यास - प्रसादात् श्रुतवान् एतत् गुह्यम् अहम् परम् ।

योगम् योगेश्वरात् कृष्णात् साक्षात् कथयतः स्वयम् ॥ १८ - ७५॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
व्यास - प्रसादात्	Vyaasa - Prasaadaat	by the grace of Vyasa	श्रीव्यासजी की कृपा से दिव्य दृष्टि पाकर	श्री व्यासांच्या कृपेमुळे (दिव्य दृष्टी मिळून)
श्रुतवान्	Shrutavaan	heard	सुना है	ऐकला आहे
एतत्	Etat	this	इस	हा
गुह्यम्	Guhyam	secret	गोपनीय	गोपनीय
अहम्	Aham	I	मैंने	मी
परम्	Param	supreme	परम	श्रेष्ठ
योगम्	Yogam	Yoga	योग को अर्जुन के प्रति	योग
योगेश्वरात्	Yogeshvaraat	from the Lord of Yoga	योगेश्वर	योगेश्वराकडून
कृष्णात्	KriShNaat	from Krishna	भगवान् श्रीकृष्ण से	श्रीकृष्णाकडून
साक्षात्	Saakshaat	directly	प्रत्यक्ष	प्रत्यक्ष
कथयतः	KathayataH	declaring	कहते हुए	सांगत असताना
स्वयम्	Svayam	himself	स्वयं	स्वतः

अन्वय :- व्यास - प्रसादात् स्वयम् योगम् कथयतः योगेश्वरात् कृष्णात् एतत् परम् गुह्यम् अहम् साक्षात् श्रुतवान् ॥ १८ - ७५ ॥

English translation:-

By the grace of Vyasa, I have heard this secret, the supreme Yoga directly from Krishna, the Lord of Yoga, himself declaring it.

हिन्दी अनुवाद :-

व्यासजी की कृपा से, दिव्य दृष्टि पाकर, इस परम गुह्य ज्ञान को, अर्जुन से कहते हुए, साक्षात् योगेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् से, मैंने सुना है।

मराठी भाषान्तर :-

श्री व्यासांच्या कृपेने म्हणजेच दिव्य दृष्टी मिळाल्यामुळे, हे अतिशय रहस्ययुक्त योगज्ञान, प्रत्यक्ष योगेश्वर श्रीकृष्ण सांगत असताना; मला ऐकावयास मिळाले.

विनोबांची गीताई :-

व्यास - देवें कृपा केली थोर योग रहस्य हें।
मीं योगेश्वर कृष्णाच्या मुखें प्रत्यक्ष ऐकिलें ॥ १८ - ७५ ॥

राजन् संस्मृत्य संस्मृत्य संवादम् इमम् अद् - भुतम् ।

केशव अर्जुनयोः पुण्यम् हृष्यामि च मुहुः मुहुः ॥ १८ - ७६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
राजन्	Raajan	O King Dhritarashtra!	हे राजा धृतराष्ट्र !	हे राजा धृतराष्ट्रा !
संस्मृत्य	SaMsmrutya	having remembered	पुनः स्मरण	पुनः आठवून
संस्मृत्य	SaMsmrutya	having remembered	पुनः स्मरण करके मैं	पुनः आठवून
संवादम्	SaMvaadam	dialogue	संवाद को	संवादाला
इमम्	Imam	this	इस रहस्ययुक्त	हा (रहस्याने युक्त)
अद् - भुतम्	Ad - Bhutam	wonderful	अद्भुत	अद्भुत
केशव - अर्जुनयोः	Keshava - ArjunayoH	between Krishna and Arjuna	भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच	भगवान् श्रीकृष्ण व अर्जुन यांचा
पुण्यम्	PuNyam	holy	कल्याणकारक	कल्याणकारक
हृष्यामि	HruShyaami	rejoice	हर्षित हो रहा हूँ।	मी आनंदित होत आहे
च	Cha	and	और	आणि
मुहुः मुहुः	MuhuH - MuhuH	Again and again	बार बार	वारंवार

अन्वय :- हे राजन् ! (अहम्) केशव - अर्जुनयोः इमम् पुण्यम् अद् - भुतम् संवादम् संस्मृत्य संस्मृत्य च मुहुः मुहुः हृष्यामि ॥ १८ - ७६॥

English translation:-

O king Dhritarashtra! As I recall again and again this wonderful and holy dialogue between Krishna and Arjuna, I rejoice again and again.

हिन्दी अनुवाद :-

हे राजा धृतराष्ट्र! भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच इस रहस्ययुक्त कल्याणकारक और अद्भुत संवाद को पुनः पुनः स्मरण करके मैं बार बार हर्षित हो रहा हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

हे राजा धृतराष्ट्रा ! भगवान श्रीकृष्ण व अर्जुन यांच्या या अद्भुत व पुण्यकारक संवादाची, वारंवार आठवण झाल्याने, मला पुनः पुन्हा आनंद होत आहे.

विनोबांची गीताई :-

हा कृष्णार्जुन संवाद राया अद् - भुत पावन।
आठवूनि मनीं फार हर्षितों हर्षितों चि मी ॥ १८ - ७६॥

तत् च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपम् अति अद् - भुतम् हरेः ।

विस्मयः मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः ॥ १८ - ७७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तत्	Tat	that	उस	त्या
च	Cha	and	और	आणि
संस्मृत्य संस्मृत्य	SaMsmrutya - SaMsmrutya	having remembered again and again	पुनः स्मरण - पुनः स्मरण	पुनः पुन्हा आठवून
रूपम्	Roopam	form	रूप को	रूप
अति	Ati	most	अत्यन्त	अत्यंत
अद् - भुतम्	Ad - Bhutam	wonderful	विलक्षण	अलौकिक
हरेः	HareH	of Krishna	श्रीहरि के	श्रीहरीचे
विस्मयः	VismayaH	wonder	आश्चर्य होता है	आश्चर्य
मे	Me	my	मेरे चित्त में	मला
महान्	Mahaan	great	महान	खूप
राजन्	Raajan	O king Dhritarashtra!	हे राजा धृतराष्ट्र !	हे धृतराष्ट्र राजा !
हृष्यामि	HruShyaami	rejoice	मैं हर्षित हो रहा हूँ	मी हर्षपुलकित होत आहे
च	Cha	and	और	आणि
पुनः पुनः	PunaH - PunaH	Again and again	बार बार	वारंवार

अन्वय :- हे राजन् ! हरेः तत् च अति अद्-भुतम् रूपम् संस्मृत्य संस्मृत्य मे महान् विस्मयः (भवति) , (अहम्) पुनः पुनः हृष्यामि च ॥ १८ - ७७ ॥

English translation:-

And as often as I recall that most wonderful Form of Krishna, great is my astonishment, O King Dhritarashtra, and I rejoice again and again.

हिन्दी अनुवाद :-

हे राजा धृतराष्ट्र ! श्रीहरि के, उस अत्यन्त विलक्षण रूप को भी, पुनः पुनः स्मरण कर, मेरे चित्त में महान आश्चर्य होता है और मैं बार बार हर्षित हो रहा हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

हे राजा धृतराष्ट्रा ! भगवान श्रीकृष्णाच्या त्या अति अद्भुत विश्वस्वरूपाची, वारंवार आठवण होऊन, मला मोठे आश्चर्य वाटत आहे व मी पुनः पुन्हा आनंदित होत आहे.

विनोबांची गीताई :-

स्मरूनि बहु तें रूप हरीचें अति अद्-भुत।
राया विस्मित होऊनि नाचतों नाचतों चि मी ॥ १८ - ७७ ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णः यत्र पार्थः धनुर्धरः ।

तत्र श्रीः विजयः भूतिः ध्रुवा नीतिः मतिः मम ॥ १८ - ७८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्र	Yatra	wherever	जहाँ	जेथे
योगेश्वरः	YogeShvaraH	the Lord of Yoga	योगेश्वर	योगेश्वर
कृष्णः	KriShNaH	Krishna	भगवान् श्रीकृष्ण	भगवान श्रीकृष्ण
यत्र	Yatra	wherever	जहाँ	जेथे
पार्थः	PaarthaH	Arjuna	अर्जुन	अर्जुन
धनुर्धरः	DhanurdharaH	the archer	गाण्डीव धनुषधारी	धनुर्धारी
तत्र	Tatra	there	वहींपर	तेथे
श्रीः	ShreeH	prosperity	श्रीलक्ष्मी	श्रीलक्ष्मी
विजयः	VijayaH	victory	विजय	विजय
भूतिः	BhootiH	happiness / glory	विभूति	ऐश्वर्य / वैभव
ध्रुवा	Dhruvaa	firm	और अचल	नित्य
नीतिः	NeetiH	policy	नीति	न्याय
मतिः	MatiH	conviction	मत है	मत
मम	Mama	my	ऐसा मेरा	माझे

अन्वय :- यत्र योगेश्वरः कृष्णः , यत्र धनुर्धरः पार्थः ; तत्र श्रीः , विजयः , भूतिः , ध्रुवा नीतिः (च इति) मम मतिः (अस्ति) ॥ १८ - ७८ ॥

English translation:- Wherever there is Krishna, the Lord of Yoga (knowledge) and Arjuna, the archer (industriousness) there arises prosperity, victory, glory and sound policy; such is my conviction.

हिन्दी अनुवाद :-

जहाँ योगेश्वर - यथार्थ और परिपूर्ण ज्ञानरुपी भगवान् श्रीकृष्ण - हैं और जहाँ गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन - धर्म और नीति को प्रमाण मानकर तत्पर नित्य कार्य करनेवाला वीरपुरुष - हैं ; वहीं पर श्रीलक्ष्मी , विजय , वैभव और अचल नीति आदि सदा विराजमान् रहेंगी ; ऐसा मेरा अटल विश्वास है ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्या पक्षामध्ये , योगेश्वर श्रीकृष्ण - म्हणजेच यथार्थ व परिपूर्ण ज्ञान आणि धनुर्धारी पार्थ - म्हणजेच धर्म व नीतीला अनुसरून तत्पर कार्य करणारा वीरपुरुष आहे ; त्या पक्षामध्ये लक्ष्मी , विजय , वैभव आणि नित्य न्याय या गोष्टी आहेत अशी माझी दृढ भावना आहे .

विनोबांची गीताई :-

योगेश्वर जिथें कृष्ण जिथें पार्थ धनुर्धर ।
तिथें मी पाहतों नित्य धर्म श्री जय वैभव ॥ १८ - ७८ ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्ष्यसंन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the eighteenth discourse designated as "the Yoga of Liberation through Renunciation".

अठराव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

त्यजूं पाहसि युद्ध परि तें प्रकृति करविल तुजकडुनि ।
तरि वद पार्था परिसुनि गीता रुचते ममता कां अजुनी ॥
मग तो वदला मोह निरसला संशय नुरला खरोखरी ।
कृतार्थ झालो प्रसाद तव हा वचन तुझें मज मान्य हरी ॥ १८ ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे . स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे . मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।
पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥